घेरे में कैद

सुमेरसिंह दईया

प्रवीण प्रकाशन बीकानेर

© सुमेर सिह दईया

प्रकाशक — प्रवीण प्रकाशन
डागा बिल्डिंग
बीकानेर
प्रथम — संस्करण
मूल्य — ४ ५० पैसे
मुद्रक — पवन आर्ट प्रेस
बीकानेर

Ghere Main Qaid—a Novel by
Sumer Singh Daiya
Price Rs 4 50 Paisa

प्रकाशन के प्रथम चरण म हिन्दी-जगत के सुविख्यात कथाकार श्री सुमेरसिंह दईया का नवीनतम उपन्यास 'घेरे मे कैद' प्रस्तुत करते हुए हमे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। निश्चय ही सुविज्ञ पाठक इसे पसद करेंगे—ऐसा हमारा विश्वास है।

आशा करते हैं कि हम भविष्य में भी हिंदी-जगत की श्रेष्ठ प्रतिभाओं के माध्यम से साहित्य की उत्तम उपलब्धियों के प्रकाशन की सुव्यवस्था करेंगे।

प्रकाशन सम्बधी सुझाव सादर आमन्त्रित हैं, जो हमारे एक मात्र मार्ग दर्शक हैं।

लेखक की अन्य कृतियां

☐ उपन्यास

- जाग उठा इन्सान
- चम्बल के किनारे
- भावनाओं के खण्डहर
- स्वप्न की पीड़ा
- स्वप्न और सत्य
- आधी के अवशेष (यन्त्रस्थ)

☐ कहानी-संग्रह

- दो-भाई
- प्यास की प्यास
- एक बड़ी मीनार
  एक छोटी मीनार
- उसने मुझे बुलाया था (यन्त्रस्थ)
- अतीत का खण्डहर (यन्त्रस्थ)

एक प्रश्न ?

इसके अंतराल में कुछ समस्यायें हैं, कुछ जटिलताए हैं, कुछ उलझनें हैं। इसके विपरीत मानव जीवन इसका उत्तर देने के लिए सतत प्रयत्नशील है

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस बार ग्रीष्म ऋतु का आगमन बड़ी प्रखरता से हुआ है। इसका परिचय तो गगन मण्डल से झाँकते हुए सूर्य की प्रकोप भरी दृष्टि से मिल रहा है, जिसके प्रभाव से दिन भर धरती तवे के समान तपती है। गर्म लू चलती है। तेज हवा में रेत मिलकर धूल उड़ती है और शीघ्र ही आँधी का आरम्भिक रूप ग्रहण कर लेती है।

इस मलिन और उदास वातावरण के बीच वह पुरानी हवेली मौन खड़ी है। लगता है, जैसे उसकी जीवन श्री कहीं अज्ञात कोने में सिमटकर आलस्य जनित निद्रा के अंक में शयन कर गई है। परन्तु इसके पार्श्व की पुरानी कचहरी में कुछ हल्के हल्के वार्तालाप का आभास मिल रहा है जो कभी कभी सीमोल्लंघन करके उच्च स्वर में परिणत हो जाता है।

इस हलचल का मुख्य केन्द्र बिन्दु है ठिकाने का मनिर काय। दर्शनि ठिकाने और जागीरें धार के प्रवाह म प्राय समाप्त हो चुकी है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि अब ठिकानेदारों और जागीरदारों के प्रजा के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क-सूत्र एवं प्रकार से टूट गए हैं। उनके अधीन का प्रशासकीय स्वरूप एक दम बदल चुका है। अधिकार पूर्ण सत्ता का राज दण्ड उनके हाथो से छिन गया है। निरकुशता का वह दृश्य ढोल मुखौटा चेहरे पर से उतर चुका है। मगर इस परिवर्तित परिवेश म अभी तक अप्रत्य स सम्बध विद्यमान है। उनका स्पष्ट नया रूप पारिवारिक आर्थिक तथा सामाजिक सम्बधो म प्रकट होकर निरन्तर विकासशील है। इसके फल स्वरूप टूटे हुए विश्वासो की कडिये पुन मजबूत होने लगी है। भय जनित दुर्भावना का विष अपने समस्त विकारो को लेकर उतर गया है और

इस नीरस और धूल भरे विपरीत गम मौसम म कचहरी जीवन क सचालक है मावर मल कोठारी—ठाकुर तेज सिह क एक मात्र विश्वस पात्र प्रतिनिधी। इस सूत्राधार क तत्वाधान म पूर्ण निष्ठा एव कमठता क साथ काय हो रहा है। विस्तृत गद्दी पर गाव तकिये लगाए हुक्के की नली हाथ म लिए हुए पुराने खाते बहियो म कुछ खोजते रहते हैं। इस वृद्धावस्था म शरीर क साथ-साथ आखे भी कमजोर हो चुकी हैं अत बडे ध्यान से अवलोकन करना पडता है। एक ओर मुनीमजी बठे एक लम्बी बही म कुछ लिखते रहते हैं। कभी कभी एक चुटकी नसवार नाक म चढा लेते हैं और दवात म कलम डुबा कर पुन लिखने म तन्मय हो जाते हैं। सामने दो प्यादे लट्ठ लिए खडे हैं। वे अपने शरीर का सारा बोझ खडे लट्ठ पर डालकर इतमिनान से एक झपकी भी ले लेते है और इसके विपरीत हल्की सी आहट पर चौंक चौंक पडते हैं।

एक प्रार्थी कोठारीजी की गद्दी क पास बठा बडी उत्सुकता और

इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस बार ग्रीष्म ऋतु का आगमन बड़ी प्रखरता से हुआ है। इसका परिचय तो गगन मण्डल से तापते हुए सूर्य की प्रताप भरी दृष्टि से मिल रहा है, जिसके प्रभाव से दिन भर धरती तवे के समान तपती है। गर्म लू चलती है। तेज हवा के संग मिलकर धूल उड़ती है और शीघ्र ही आंधी का प्रारम्भिक रूप ग्रहण कर लेती है।

इस मलिन और उदास वातावरण के बीच वह पुरानी हवेली मौन खड़ी है। लगता है, जैसे उसकी जीवन श्री कहीं अज्ञात कोने में सिमटकर आलस्य जनित निद्रा के अंक में शयन कर गई है। परन्तु इसके पास की पुरानी कचहरी में कुछ हल्के हल्के वार्तालाप का आभास मिल रहा है जो कभी कभी सीमोल्लंघन करके उच्च स्वर में परिणत हो जाता है।

घेरे

मे

क़ैद

इस हवेली का मुख्य केन्द्र बिन्दु है ठिकानेदार निर्बाध । यद्यपि ठिकाने और जागीरें काल के प्रवाह में प्राय समाप्त हो चुकी हैं । कहने की आवश्यकता नहीं है कि अब ठिकानेदारों और जागीरदारों के प्रजा के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध-सूत्र एक प्रकार से टूट गए हैं । उनके अधीन का पंचायतीय स्वरूप एक दम बदल चुका है । अधिकार पूर्ण सत्ता का पाप दण्ड उनके हाथों से छिन गया है । निरंकुशता का वह हृदय हीन मखौटा चेहरे पर से उतर चुका है । मगर इस परिवर्तित परिवेश में अभी तक अप्रत्यक्ष सम्बन्ध विद्यमान है । उनका स्वरूप नया रूप पारिवारिक आर्थिक तथा सामाजिक सम्बन्धों में प्रकट होकर निरन्तर विकासशील है । इसके फलस्वरूप टूटे हुए विश्वासों की कड़िये पुन सघन होने लगी है । भय जनित दुर्भावना का विष अपने समस्त विकारों को लेकर उतर गया है और

इस नीरस और धूल भरे विपरीत गर्म मौसम में कचहरी जीवन के संचालक हैं मावर मल कोठारी—ठाकुर तज सिंह के एक मात्र विश्व सपात्र प्रतिनिधी । इस सूत्राधार के तत्वाधान में पूर्ण निष्ठा एवं कर्मठता के साथ कार्य हो रहा है । विस्तृत गद्दी पर गाव तकिये लगाए हुक्के की नली हाथ में लिए हुए पुराने खाते बहियों में कुछ खोजते रहते हैं । इस वृद्धावस्था में शरीर के साथ-साथ आंख भी कमजोर हो चुकी हैं अत बड़े ध्यान से अवलोकन करना पड़ता है । एक ओर मुनीमजी बैठे एक लम्बी बही में कुछ लिखते रहते हैं । कभी कभी एक कुन्नी नसवार नाक में चढ़ा लेते हैं और दवात में कलम डुबो कर पुन लिखने में तन्मय हो जाते हैं । सामने दो प्यादे लट्ठ लिए खड़े हैं । वे अपने शरीर का सारा बोझ खड़े लट्ठ पर डालकर इतमिनान से एक झपकी भी ले लेते हैं और इसके विपरीत हल्की सी आहट पर चौंक-चौंक पड़ते हैं ।

एक प्रार्थी कोठारीजी की गद्दी के पास बैठा बड़ी उत्सुकता और

उधनी से इधर उधर ताक रहा है। वह गाव का एक राजपूत किसान है। कभी वह भी एक जागीरदार था। उनके पर्याप्त जमीन जायदाद थी मगर किसी दुर्भाग्य के अभिशाप से व सब नष्ट होगई। अब तो बचत एक पक्के मकान और दो छोटे खेतों के अतिरिक्त कुछ भी नाथ नहीं है। मगर का पर!

उसने विनीत स्वर म कहा–"कोठारीजी! ठाकुर साहब अपना निर्णय दे चुके है। अपनी आपकी सहमति की आवश्यकता है।"

सांवर मल ने अपनी छोटी छोटी आखो की दृष्टि उसपर टिकाती, तत्पश्चात् अप्रसन्नता का भाव लेकर कहने लगे–"जीतू! सारा हिसाब किताब मुझे रखना पड़ता है, ठाकुर साहब को नही। उनका एक पैर तो गाव म रहता है और दूसरा नगर म। अगर इस प्रकार रुपये इधर उधर फेंकने प्रारम्भ कर दिये तो काम कब चलेगा? यह भी कोई तरीका है ।'

। 'सेठजी! मैं रुपये उधार मांग रहा हू।'

"अरे, जीतू ठाकुर! मैं सब जानता हू।'

कोठारीजी ने खाते-बहियां को एक ओर हटाकर चहरे पर आए पसीने को पोछा। इसके पश्चात् उन्होने एक दृष्टि ऊपर छत पर लग मथर गति से चलने वाले सीलिंग फैन पर डाली। अब खीझ कर बोले–"इस गर्मी ने तो नाक म दम कर दिया।'

स्वभावत उनका एक हाथ हुक्के की नली पर गया, जो पता नही कब इनकी मुट्ठी में से छूट चुकी थी। उन्होने फूक खींची मगर धुआं न निकला। हुक्का कभी का बुझ गया। सेठजी व्यग्र होकर बोले– हीरा! जल्दी से दूसरा हुक्का भरकर ले आ।'

दोनो प्यादे चौंक कर एक साथ बोले–'जो सेठ जी –।'

'क – हू क – हू –!' सेठजी का क्षोभ भरा मन एक दम चीख

उठा–' सेठजी क बच्चे, तुम दोनो उल्लू हो। दिन भर ऊंघना और मुफ्त की रोटियां तोड़ना—बस, अभी कोई चोर या डाकू कंप रा म आकर इस निजोरी पर हमला करदे तो तुम क्या करो। बताओ ।

'जी जी, गलती हो गई।'

इस स्वीकारोक्ति से सावर मन का किंचित् सतोष हुआ। उनका कोप मुद्रा तनिक शिथिल होगई।

अच्छा हीरा! तू हुक्का भरला और तू मोती भीतर रावन म जाकर लाडीसा से अज करना कि हरसूक साथ ठडाई के गिलास भिज वाने की कृपा करें। गला सूख रहा है ——।'

जी अच्छा।

दोना ने स्व चालित खिलौन की भाति गर्दन हिलाई और लट्ठ को एक कोने रख कर चल दिए।

"हा तो मुनीमजी, जरा जीतू ठाकुर का हिसाब तो बनाना। ब्याज समेत पिछला कितना बाकी है?'

'अभी लो सेठजी!

मुनीमजी न अप्रत्याशित तत्परता का प्रदशन किया।

" लिजिए सेठजी।

पुर्नि म एक चुम्की ननवार नाक म चढ़ाकर और घोती की लांग को सम्हाल कर मुनीमजी ने एक कागज का टुकड़ा कोटारीजो के हाथ म थमा दिया। उसमे विस्तार पूर्वक हिसाब की नकल उतारी गई है।

साँवर मल ने उसे ध्यान पूर्वक पढ़ा। इसके उपरांत नये भरकर लाए ताज हुक्के की फूंक खींची, तब बोले— 'लो, जीतु ठाकुर! तुम्हारा हिसाब तयार है। आज की तारीख तक मय सूद के कुल मिलाकर एक हजार पाच सौ पचपन रुपये और पैंतीस पैसे बकाया निकलते हैं।'

लगा, जसे इस कथन का प्रार्थी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इस दृष्टि से देखने पर ज्ञात होगा कि सेठजी ने हिसाब लिखाकर

जो ब्याज और मय असल भरना चाहा है उनमें ये बाकी पत्र लिख हुए हैं।

"कोठारी जी! यह सब ठीक है। —दसने शान्ति पूर्वक कहा—मैं अगली फसल पर सब चुकता कर दूंगा।

सांवर मल ने पथ तृण दृष्टि जीतू पर डाली और निर्णायक स्वर में बोले— अब तो ठाकुर साहब के ध्यान पर ही फगड़ा होगा। भई, दो हजार की मोटी रकम है इसलिए सोच-समझकर —।

नहीं-नहीं।—अत्यन्त घबराकर जीतू कहने लगा— तब तक मैं ठहर नहीं सकता। मेरी लड़की की शादी है एक पखवाड़े के बाद —।

तो मैं क्या करूं ?

सहसा सांवर मल की भगिमा कठोर होगई।

'सेठजी! ठाकुर साहब इस कर्ज के सम्बन्ध में पहले ही स्वीकृति दे चुके हैं।

'यह सब मैं सुन चुका हूं। अधिक कहने की आवश्यकता नहीं।

अब सेठजी गद्दी पर पसर कर लेट गये। धीरे धीरे कहने लगे—'जीतू ठाकुर! मेरी चार पीढ़ी ठाकुर साहब का नमक खाकर पलती आरही है—तुम जानते रहे। इस कारण से उनके हिताहित का पूरा ध्यान रखना मेरा प्रथम और अन्तिम कर्तव्य है। यद्यपि तुम्हारे प्रार्थना पत्र पर उनकी स्वीकृति है मगर तुम्हारे बकाया का हिसाब उन्हें दिखाना आवश्यक है। मैं तो समझता हूं कि उन्हें तुम्हारे पुराने कर्ज के सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं है——।'

'नहीं—नहीं सेठजी! ऐसा मत कीजिए, वरना । —विवश हो जीतू असहाय स्वर में गिड़गिड़ाया।

सांवर मल ने एकदम चुप्पी साधली, मानो मौन समाधि लेली है।

हताश और निराश जीतू कुछ देर तक अपनी वर्तमान दुरवस्था का रोना रोता रहा। लेकिन सब व्यर्थ! सामने शिला—खण्ड है जिसम से वाणी फूटने का प्रश्न ही नहीं उठता।

तभी पीछे से दरवाजा खुला और लम्बा सा घूंघट काढ़े एक नौकरानी ने चिक उठाकर प्रवेश किया। उसके हाथों में लकड़ी की ट्रे है जिस पर चार पीतल की गिलासें रखी है। एक सूखे मेवे की तश्तरी भी शोभित हो रही है।

ट्रे नीचे रखकर वह शीघ्र ही चुपचाप लौट गई।

कोठारी जी ने समाधि भंग करते हुए कहा— लो, जीतू ठाकुर! ठंडाई पीओ। मुनीम जी आप भी एक गिलास उठाइये और —।'

इतना कहकर सेठजी पालथी मारकर बैठ गये। हाथ आगे बढ़ाकर एक गिलास उठाया और उसे अविलम्ब ही मुंह से लगा लिया।

मुनीम जी भी खीसें निपोर कर अपने स्थान से उठे। बस, जीतू उन गिलासों को बड़ी अनमनी दृष्टि से ताकता रहा।

पुनः चिक का पर्दा उठा और एक लम्बी सी गोरी नवयुवती ने प्रवेश किया। सबकी दृष्टि उठकर एकाएक उस मृगनयनी पर ठहर गई। उसके आकर्षक व्यक्तित्व का प्रभाव ऐसा पड़ा कि उपस्थित सभी लोग बड़े आदर से खड़े हो गए और गर्दन झुका कर अभिवादन करने लगे। उसके पसीने से भीगे कमनीय मुख पर हल्की सी मुस्कान खेल गई।

बैठिए आप लोग। —उसने सहज स्वाभाविक स्वर में कहा।

इस बीच कोठारी जी तनिक अस्त-व्यस्त से हो गए। चाहकर भी वे सुस्थिर न रह सके।

रानी बिटिया! तुम इस गर्मी में यहां कैसे चली आई?

'परों-परा पनी माई सेठजा ! —सारमवरिष्ट स क स्वर मैं प्रति उत्तर मिला।

नीरू बाईसा ! प्रापरा इस उस्न मोसम म रावल से बाहर नहीं माना चाहिए। —प्रास्पद स पटी प्रांसा म मात्र कौतुक का भाव लेकर मुनीम जी भी बोल।

'बस, यू ही चनी माई।'

बालक जती सरलता प्रोर निस्पृहता रमणी के मुख पर प्रनायास ही फल गई।

मेरे कहने का तात्पय यह है कि ।'

बीच ही म बाधा देकर उसने कहा— मैं ऊपर कमरे म पदसी बटी-बठी ऊब गई। प्रभी सा सो चुकी हैं। क्या करती ? मैं सुन ही टहाई बनाकर कुछ देर क लिए यहां प्रा गई। प्रापके काम म मैं किसी भी प्रकार की बाधा नही दूगी—प्राप निश्चित रह।'

इसके साथ वह मधुर हसी हस पडी।

यह तो मैं भली भाती जानता हू—किन्तु ।

बेचारे वृद्ध की निबल वाणी इस हसी के नीच न्व सी गई।

क्षण भर पश्चात् व उच्च स्वर म आकस्मिक उत्साह का प्रदर्शन करके बोले— 'प्ररे हीरा ! देखता क्या है ? एक कुर्सी प्रदर से लाना। प्राज रानी बिटिया स्वय कचहरी करेंगी।

सबके चेहरे पर निर्मल हास की रेखायें खिच गई। सचमुच, सावर मल का यह परिहास इतना सटीक, प्रभावशाली प्रौर समयोनुकूल है कि सब के मन को भा गया।

कुर्सी खाली

यह नवयुवती सकोच रहित सी बनकर बैठ गई। इसके पश्चात हँसकर बोली—"कोठारी जी ! यदि मैं इस प्रकार सदव कचहरी करती रहूँगी तो फिर आप का क्या होगा ?"

"छुट्टी !"

वृद्ध सावर मल इस निश्छल हँसी म योग देकर परिहास का आनन्द लेते हुए बोले।

आप ऐसा क्यों सोचते हैं ?"

"इसलिए कि— ।"

बस, सेठजी की जीभ अचानक अटक गई। वे कुछ बोल न सके। क्षण भर पश्चात् कुछ सोचकर कहने लगे— मैं— मैं सठिया जा

गया हूँ— ।"

इनके साथ सब के मुह से हँसी की बौछार फूट पड़ी ।

वास्तव म इस कचहरी से इस लड़की का गहरा पुराना सम्बध रहा है । पहले ठाकुर साहब जब कभी कचहरी म आकर बटते तो उनकी यह छोटी बहिन-निमला कुमारी—पीछ-पाछ चली आती और उनकी गोदा म बठकर बही-खातो को इधर-उधर उलटती-पलटती रहती । प्राय हाथ लगाते ही दवात उलट देती, कलम तोड देती, कागज-पन्ने फाड देती । ठाकुर साहब देखी अनदेखी कर जात । अवसर टाल जात हँसकर । यह उनकी लाडली छोटी बहिन है । इस नाते उस पर उनका अगाध स्नेह है । इसके अतिरिक्त बाल्य काल म ही माता पिता के आकस्मिक निधन के कारण वे बडे दुखी रहते । शेष दोनो बहनो ने मातृ मोद और पितृ स्नेह का सौभाग्य स वरदान पाया था, लकिन यह हतभागा लड़की इसमे भी सवथा वचित रह गई ।

इसी प्रकार का क्रम नियमानुसार ठाकुर साहब की अनुपस्थिती म भी चलता रहता । वह सावर मल कोठारी की सहज ही मे "रानी बिटिया बन गई । वे हँसी हँसी मे उसके साथ खेलने भी लगत । गद्दी पर उसे बिठलाकर वे उसके परों के पास बठ जाते । वे अब सलाह लते— 'क्यो, रानी बिटिया ! इसे क्या दण्ड दें ?'

छोड दो ।' —सिर हिलाकर बालिका भट से कहती ।

"बस, छोड दें या इसकी पिटाई करें ।"

"पिटाई !' —बालिका की आखों में भय की छाया तर जाती— "नही—नहीं । बेचारा रो देगा— ।"

सब हस पडते । निमला भी ताली पीटने लगता ।

'यह बडा खराब आदमी है रानी बिटिया !'

"अच्छा !" —बालिका के नेत्र बाल-सुलभ आश्चय मे विस्फारित हो जाते-- इसे कमरे म बन्द करदो—बस ।"

यह आवश्यक नही है कि इन सब बातो को मानन के लिए बाध्य होना पडता। घडी भर के लि बहलाव की नीयत स कोठारी जी बालिका का मन भी रख लेते। भीतर हवेली से बुलाहट आती तो बालिका तुरत चली जाती और वे अपने काम म व्यस्त हो जाते।

इसके उपरात समय का दीघ अ तराल आया जिसके अ तगत निमला एक प्रकार से गाव से टूटकर शहर चली गई। विद्यालय म शिक्षा ग्रहण करन के उद्देश्य से उसने प्रवेश किया। कहने का अथ यह है कि एक सवथा नय जीवन का शुभारम्भ होगया, जो फूलो की तरह कोमल है, सपनो की तरह मोहक हैं, वसत बहार की तरह रमणीक है।

अचम्भा तो इस बात का है कि इस लडकी न वहा भी अपनी अपूव मेघा का परिचय दिया और देखते-देखत ही शिक्षा क उच्च सोपानो को सहज ही म पार कर गई। बचपन की वह मटमली सध्या ढल गई और उस के स्थान पर यौवन के प्रभात की मीठी धूप खिल गई। अकस्मात् सूरज-मुखी, के सुन्दर सुमन प्रस्फुटित हो गये और उनकी मन मोहक सुगन्ध चहु ओर फैल गई। कई वष आख मिचौनी करके चुपके से बीत गए और एक दिन बी ए की डिग्री लेकर वह नव-युवती प्रलुब्ध सौदय-मूर्ति बनकर पुन' गाव म लौट आई।

इसमें कोई आश्चय नहीं है कि इन बदलती परिस्थितियो मे अब ठाकुर-साहब क लिए परिवार-सहित शहर मे रहना एक प्रकार से कठिन हो गया, अत शीघ्र ही उन्हें इसका मोह त्यागना पड़ा और वे गाव म आकर अपनी शेष बची जमीनें सम्हालने का प्रयास करने लगे, जिसमे उन्हे आशातीत सफलता मिली। इसके अतिरिक्त

जागीरें समाप्त होने की दशा में उन्हें जो आर्थिक हानि उठानी पड़ी है, उसकी सहज ही में थोड़ी बहुत पूर्ति आय के इस स्रोत से स्थाई रूप से होने लगी। जब से गांव में सहकारी मंडी का विकास हुआ है और नहर से पानी मिलना सुलभ हो गया है—उसके द्वारा सिंचाई की सुव्यवस्था हो गई है तब से आय भी बढ़ने लगी। अब तो भाखरा-नांगल की बिजली भी उपलब्ध है और गांव वाले उसका पूरा लाभ उठाते हैं। यह कोई अतिशयोक्ति पूर्ण कथन नहीं है कि इस गांव की एक प्रकार से काया पलट सी हो गई है। कृषकों की अवस्था सुधार पर है। उन के रहन-सहन में खुशहाली की स्पष्ट झलक मिल रही है। उनका अपना पंचायत घर है। स्कूल डाक खाना, अस्पताल और सहकारी बैंक की समुचित सुविधायें उन्हें उपलब्ध हैं।

निमला ने जीतू की मुख मुद्रा को तनिक भांप लिया कि वे कुछ अशांत से हैं अतः पूछ बैठी—'जीतू काका! क्या बात है?'

किंचित् झिझक कर दुःखी मन से उसने उत्तर दिया—'रानी बिटिया! बात तो कोई खास नहीं है। कर्ज लेन के सम्बन्ध में ।'

कर्ज!"

कुछ स्मरण करके निमला बोली—"वो तो नहीं, जिसके लिए भाई साहब मेरे सामने स्वीकृति दे चुके हैं।'

'हां। वही।'

जीतू ने एक पल कोठारी जी की ओर दृष्टि निक्षेप किया तो ज्ञात हुआ कि वे निमला के इस अनावश्यक हस्तक्षेप के प्रति असंतुष्ट हैं। परिहास को एक नया रूप ग्रहण करते देख वे अचानक क्षुब्ध हो उठे। उन्होंने स्पष्टीकरण करने के अभिप्राय से कहा—'रानी बिटिया!

ठाकुर साहब प्रार्थना-पत्र पर स्वीकृति तो प्रदान कर चुके हैं, पर मेरी दृष्टि में यह उचित नहीं। मुझे विश्वास है कि उन्हें जीतू ठाकुर के पुराने ऋण के सम्बंध में कुछ भी जानकारी नहीं है। इसलिए पहले पुराना हिसाब—।"

'मैं तो समझती हूँ कि भाई साहब सब सोच-समझकर स्वीकृति दे गये हैं। अब आपको इसमें लेश मात्र भी आना कानी नहीं करनी चाहिए।" निर्मला ने प्रतिवाद किया।'

"यदि ऐसा होता तो वे मुझे स्पष्ट कह जाते।'—सावर मल का कण्ठ सहसा प्रखर हो गया।

'वे जल्दी में थे सेठ जी!"—निर्मला गम्भीर स्वर में कहने लगी—इसके अतिरिक्त प्रार्थना-पत्र पर ही अपनी स्वीकृति देना उन्होंने पर्याप्त समझा। वे स्वप्न में भी ऐसा सोच नहीं सकते कि उनकी स्वीकृति पर भी आपत्ती उठ सकती है।'

"नहीं-नहीं।' सेठजी इस बार एकदम उद्विग्न हो उठे - रानी बिटिया! मेरे कहने का यह कदापि अर्थ नहीं है——।"

अब निर्मला भली-भांति जान गई कि कोठारी जी उसके तर्कों के आगे निरुत्तर हो चुके हैं अतः अधिक कहना उचित नहीं है। उनकी इस अवस्था पर उसे दया भी आ गई। अपने होठों पर बलात् हल्की सी हँसी की झलक लेकर वह बोली कोठारी जी! जीतू काका के घर में विवाह है। काकीमा अभी थोड़ी देर पहले सगुन की गुड़ की भेली और पीले चावल भाभी सा को रावले में नजर करके गई हैं। यह एक प्रकार से विवाह का अग्रिम निमंत्रण है। इस कारण से हमारा भी एक कर्तव्य सा हो जाता है कि इनके इस शुभ कार्य में तनिक सहयोग दें। दूसरे वे हमारे गाँव के प्रतिष्ठित निवासी हैं। इसलिए किस पराये के आगे हाथ फैलायेंगे—— बोलिए ——।

प्रश्न पूछकर वह अपलक कोठारी जी को ताकने लगी, जो अब अपनी अस्थिरता को दबाकर सामान्य होने के लिए प्रयत्नशील हैं।

वे उतावली में बोले—"अच्छा मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ—बस।

इसके पश्चात् खिसियानी हँसी हँसकर वे कहने लगे—'रानी बिटिया" मैं वृद्ध जो हो गया हूँ इसलिए कभी-कभी बहक जाता हूँ — हि — — हि — हि — ।"

निपमा भी उनके साथ मंद मंद हँस पड़ी।

इस देश में विवाह जहा एक ओर धार्मिक अनुष्ठान का पुनीत संस्कार है—वहा वह दूसरी ओर सामाजिक परम्पराओ से परिपूर्ण रंगीन समारोह भी है। यह एक सेतु है दो अपरिचित परिवारो के मिलन का, जो सहज ही में निकट आ जाते हैं। यह एक अटूट बंधन है दो अनजान हृदयों का जो अनयास ही प्रेम की पवित्र डोर में बंधकर एक हो जाते हैं। वे नई आशायें एव आकांक्षायें लेकर अपनी जीवन तरणी को संसार-रूपी महा-सरोवर म निर्बाध छोड देते हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस शुभ अवसर पर स्त्री-पुरुषों के मन उल्लास एव हर्ष से भरे रहते हैं। इधर उमडा हुआ हृदय—उधर मांगलिक गीतो की मनोहारी बहार। छोटे-बडे का भेद भूलकर सारे गाव वाले इस उत्सव मे सम्मिलित होकर गौरव अनुभव करते हैं।

कहीं पकवान बन रहे हैं तो कहीं पूरियें निकाली जा रही हैं। वायुमण्डल मे विचित्र प्रकार की गंध रस-बस गई है। पूरी की पूरी भीड

सारी लडकियें चकित रह कर एक स्वर मे बोली – यह आपने अच्छा नही किया ।"

उसी पल निमला गम्भीर हो गयी । उसकी तीखी दृष्टि महेश की उन हसती आँखो म गड सी गई जो इस खेल पर मन ही मन खूब रस लेकर हस रहा है ।

अत मे अपने हृदयगत भावो को व्यक्त करने की चेष्टा को निमला बरबस रोक न सकी ।

तो यह शरारत आपकी है— — क्यो ।"

जी हा ! — जी — नही ——— ।

महेश अपनी हसी क आवेग को रोक कर उतावली मे बोल पडा ।

" ओह — — ।

देखते-देखते वह लडकिया का झुड बिखर गया । अब महेश अपनी अनियन्त्रित हसी स सारे कमरे को प्रतिध्वनित कर उठा ।

दूल्हा कुछ समझ न सका । वह बुद्धू की तरह मु ह बाए पूछ उठा— महेश ! यह क्या क्या — मजाक था — ?

'और नहीं तो तेरा सिर था — — ।'

हसी के बीच महेश चहका ।

"ओ फ फ ।'

दूल्हा पश्चाताप के स्वर मे दीर्घ नि श्वास छोड कर चुप हो गया ।

कुछ देर के उपरांत लडकियों का वह झु ड अकस्मात् उस कमरे में पुन आ गया ! आगे बढ़कर निमला ने आश्चर्यात्मक स्वर में कहा - आप जरा इधर चलिए ।

'जी — — जी — मैं । दूल्हा अव्यवस्थित मन स्थिती मे कर बोला-"और ये — — ।

स्पष्टत उसका सकेत अपने शुभेच्छु मित्र महेश की ओर है। भला, वह अपने परामश दाता को कैसे भूल सकता है।

निमला की प्रखर दृष्टि महेश के चेहरे पर ठहर गई।

'जी नहीं।' उसने कहा–"शादी आपकी हो रही है इनकी नहीं।"

इसके साथ सारी लडकियें मनचाहे खिल–खिला पडी।

महेश तनिक लजा गया।

कमरे म एक दम नीरवता छा गई। महेश अकेला बैठे–बैठे ऊब गया। उसने सोचा कि बाहर जाकर बारातियो के सग मिल जाए, लकिन उसका मित्र —? उसे अकेला असहाय इन लडकियों के हाथा म छोड देना तो एक प्रकार का अयाय है।— तब?

कुछ विलम्ब क पश्चात् अपना सा मुह लेकर उसका दूल्हा मित्र वापिस लौट आया। उसक पीछ लडकियो की बडी तेज खिलखिलाहट सुनाई पड रही है। महेश का आशकित हृदय धडक उठा।

"क्या हुआ बन्धु ?"

वस, पूछो मत।"—दूल्हा बुझे हुए स्वर म कहने लगा –"इन गाव की छोकरियो न तुम्हारे इस बधु को खूब उल्लू बनाया।"

'उल्लू।'—महेश के मुह से विस्मय फूट पडा — वो कसे?'

'यार, एक कोने म लाल कपडे से ढकी एक मूर्ति रखी थी। इन लडकियों ने बडी सजीदगी से मुझे कहा कि ये हमारे कुल-देवता हैं अत आप इन्हें साष्टग प्रणाम करें। मैं उनके कहने मे आगया। इसके पश्चात् उन्होने निर्देश दिया कि आप अपनी तलवार की नोक से मूर्ति क आगे का लाल कपडा दूर करदें। बिना किसी सकोच के मैंने वैसा ही किया तो ज्ञात हुआ कि वहा कोई देवता की मूर्ति नहीं है, बल्कि

एक फटा पुराना जूता रखा है, जिस में आदर-पूर्वक प्रणाम कर चुका हूं। तभी से वे सब हंस कर मेरी खिल्ली उड़ा रही हैं।'

सम्पूर्ण वृतांत सुनकर महेश भी अपनी हंसी रोक न सका।

चिढ़कर उसका मित्र बोला— वाह बेटा ! तू भी हंस रहा है।

"तो क्या करूं ?'—दांत निकाल कर महेश ने परिहास-पूर्ण स्वर में कहा— 'बीबी इतनी आसानी से थोड़े ही मिलती है बन्धु— ।

"ओह !"

महेश ने खिल खिल करते हुए अपने मित्र के गले में बांहें डाल दीं।

यह कोई अतिशयोक्ति पूर्ण कथन नहीं है कि यह महान् भारत देश प्रकृति का एक अद्भुतालय है। इसमें कई जातियां रहती हैं। विभिन्न वर्ण के लोग हैं। उनकी भाषा रहन-सहन तथा खान पान तक भिन्न है। प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक दृष्टि से स्वतन्त्र है और अपनी इच्छानुसार पूजा तथा आराधना करता है—इसमें किसी प्रकार का अवरोध उपस्थित नहीं होता। इसके अतिरिक्त एक ही धरती पर एक ही आकाश के नीचे रहकर भी ये पृथक-पृथक अपनी परम्परानुमोदित रीतियों का पालन करते हैं और सहज स्वाभाविक रूप से जीवन-यापन करते हैं। निश्चय ही यह विचित्र संयोग है।

इसमें कोई संशय नहीं है कि इस अनेकता में ही एकता का शाश्वत स्वर अनुगुंजित हो रहा है। इस विविधता में ही अविच्छिन्न रूप में एक ऐसी सांस्कृतिक धारा निरंतर प्रवाहशील है, जो टूटने से बचाती है—बिखरने से रोकती है। कमजोर कड़ियों को पुनः जोड़ कर सशक्त

सभ्यता के अमिट स्वरूप को आज तक बनाए हुए है, जो जीवित है—गति शील है। मनुष्य मनुष्य के बीच जो रागात्मक है, उसे गम्भीर व्यापक और विशाल बनाने मे यह सभ्यता निश्चित रूप से शक्तिशाली सिद्ध हो गई है। इसके अतिरिक्त मनुष्य को उसके आत्म-स्वरूप की उपलब्धि म सहायता पहुँचाने और आत्मा के समुत्थान म इस सस्कृति न एक सराहनीय भूमिका निभाकर पूर्ण योग प्रदान किया है। इसक लिए इस देश की मनुष्य जाति सदव ऋणी रहेगी। विश्व-जागृति क अभियान म इसने महत्व पूर्ण एव उल्लेखनीय मार्ग-दर्शन भी किया है—यह इसकी एक और प्रमुख विशेषता है।

स्पष्ट है कि राजस्थान यू भी पर्वो तथा त्यौहारों का एक रमणीय प्रदेश है। उनके कई परम्परानुमोदित रीति रिवाज हैं—प्रथायें हैं। उनके माध्यम स आज भी कुछ ऐसे धार्मिक-सस्कार जीवित हैं जिन्हें नत-मस्तक हो यहा की जनता श्रद्धा-पूवक स्वीकार करती है। लगता है जैसे उनके रक्त मे व पूरी तरह घुल मिल चुके हैं।

प्रतिष्ठित राजपूत घरान का भी एक सव मान्य एव सव प्रिय प्रथा है भरू जी की जात! इसकी अपनी निराली विशेषता है। इसका शुभारम्भ पशु-बलि (बकरे की बलि) से होता है जो विवाह समारोह म कहीं-कहीं एक आवश्यक अनुष्ठान है।

स्थिती का स्पष्टीकरण करते हुए कहा जा सकता है कि कुछ राजपूत-परिवार अपने कुल देवता के रूप म भरू जी की पूजा करते हैं। बच्चे क मुडन-मस्कार म भी पशु बली देकर उनकी पूजा की जाती है। परन्तु विवाह समारोह का अतिम सस्कार है दूल्हा दुल्हन की गठ-बधन क साथ भरू जी की जात' देना। परिवार के लोग अन्य सम्बन्धियों को लेकर निश्चित समय पर भरू जी क मंदिर की ओर

प्रस्थान करते हैं, जो एक दूर के छोटे से गाव मे हैं।

विधी के अनुसार भैरू जी की पूजा होती है। दूल्हा-दुल्हन अपने शादी के कपडा मे पवित्र मुर्ति के चारो तरफ फेरे दत है और प्रणाम करते हैं। सारी रात स्त्रियें मागलिक गीत गाकर 'रतजगा देती है। पहल "मीठी-पूजा" होतो है अर्थात मिष्ठान का प्रसाद चढना है। यद्यपि इसका वास्तविक काय तो अभी शेप है जो बकरे की बलिम पूण होना है, इस 'चरकी-पूजा कहत हैं और यह सुवह की जाती है।

बकरे को नहला कर एक माला पहनाई जाती है। वेदी के पास ले जाकर उलके भी तिलक लगाते हैं। उसकी भी पूजा करते है। पुजारी जी कुछ मत्र पढते हैं। इसके उपरान्त एक व्यक्ति पवित्र तलवार लकर उसका वध करता है। उसके उष्ण लहू से मूर्ति के पैरो का प्रक्षालन करके इस धार्मिक अनुष्ठान का समापन होता है।

समय पर सम्पूर्ण वाञ्छित प्रबन्ध होगया। अतिथिगण एवं सम्बन्धी पहले ही प्रस्थान कर चुके हैं। रह गए हैं कुछ लोग जिनमें दूल्हे के मित्रों की एक टोली है। दूसरी ओर है दुल्हन की सखी-सहेलियों का एक दल, जिनके लिए ठाकुर साहब की दो जीपें तयार खड़ी हैं।

लाईमा ने टोका—"नाक ! रुको। तुम्हारा वहाँ जाना ठीक नहीं रहेगा।

'भला क्यों ?'—निमन्ता ने बड़े भोलेपन से पूछ लिया।

वह एक छोटा सा गांव है। एक धर्मशाला के अतिरिक्त वहाँ ठहरने के लिए कोई उपयुक्त आराम दायक स्थान नहीं है। व्यर्थ में कष्ट होगा।'

च च च ! मेरी इस भाभी को कितनी चिंता है।'—निमन्ता हास्य-पूर्ण मुख मुद्रा बनाकर कहती।

तनिक ठहरकर विस्मित स्वर म बोली—'भाभी ! इतनी सारी औरतें और लड़कियें जा रही हैं वे वे —।"

'उनकी बात अलग है।"—लाडीसा ने बीच ही म सजीदगी से कहा—'वे जन्म से गाव म रहती आ रही हैं अत अभ्यस्त हो चुकी हैं। उनका स्वभाव यहा के वातावरण के अनुकूल है। तुम कई वर्षो तक शहर म रह कर आई हो, इसलिए तुम्हारी प्रकृति इनसे सवथा भिन्न है।"

गलत !'—वह रहस्य-पूर्ण मुद्रा अधिक मुखर हो गई—" भाभी ! अब तो मुझे यहा रहना है। इस कारण से यहा के रस्म रिवाजो को अपनाना और यहा के विवाहोत्सव म सम्मिलित होना अति आवश्यक है। मैं इन लोगों स कटकर बिल्कुल अलग थलग नही रह सकती।— मैं मैं पर्दे के भीतर रहने वाली गुड़िया थोड़े ही हू— ।

'मैं जानती हू नीरू ! किन्तु ।"

"किन्तु विन्तु कुछ नहीं। —निमला आवेग म कहने लगी— इस बार मैं भी भरू जी की पूजा देखने की इच्छुक हू। भला ऐसा सुयोग कितने समय के पश्चात् मिलता है — ।'

इस हठ के आगे लाडीसा बिल्कुल परास्त हो गई। यद्यपि उनका चेहरा देखने स स्पष्ट विदित हो रहा है कि चिन्ता की घटा अभी तक छिन्न-भिन्न नहीं हुई है। उन्होंने उदास मन से आज्ञा दी— अच्छा।'

'आह ! मेरी अच्छी भाभी !"

निमला हर्षातिरेक म उछल पडी।

कुछ ही देर म दोनो जीपें भर गई। एक जीप मे दुल्हन के साथ उसकी सखी-सहेलिया का दल धम गया और दूसरी म दूल्हे के मित्र-गण लद गए। लड़कियो को जीप चलाने के लिए एक ड्राईवर है और दूसरा जीप की स्टीयरिंग स्वय महेश सम्भाल कर बैठा है।

हास-परिहास के बीच दूल्हे ने कहा 'देखें, किस की जीप आगे निकलती है ? दौड़ हो जाय।"

'स्वीकार है।' हसते हुए निमला बोली।

'जो जीतेगा, उसे क्या मिलेगा ?' उन हसती आखों म दृष्टि गडा कर महेश ने पूछ लिया।

मुह मागा पुरस्कार। -निमला ने कटाक्ष करके उत्तर दिया।

'अच्छा !'

दखते-दखते वे दोनों जीप-गाड़ियें हवा से बातें करने लगी।"

सर्व-प्रथम महेश की जीप अचानक आगे निकल गई। बस फिर क्या है ? लडको की बन आई।

वे दात निकाल जीभ दिखा सीटी बजा कर लडकियो को मुह चिढ़ाने लगे। बस निमला कुपित हो गई। उसने ड्राईवर को झुभलाकर कहा आज तुझे क्या हो गया ? ——क्या ये शहर के लडके हमारे गाव की नाक काट कर ले जाएगें —?

नहीं बाईसा ! अभी ला।

आवेग मे ड्राईवर इतना बोला और इसके साथ फुल-स्पीड मे गाडी छोड दी। अकस्मात् जीप एक प्रकार से उडकर महेश की जीप के आगे आगई। एक आश्चर्य-जनक चमत्कार हो गया। सब चकित रह गये।

खीझ भरे स्वर म दूल्हा चिल्लाया-- महश ! अब तुझे क्या हो गया ?'

परन्तु महेश तो किंकर्तव्य-विमूढ है। अगली जीप म पीछे बैठी निमला की उजली धूप सी खिलखिलाती हुई हसती आखो में उसकी दृष्टि बरबस खो-खो जाती है और इस कारण से वह शीघ्र ही आत्मा विस्मृत हो गया। अब तो जादू भरे नयनो से बशीकरण के तीखे बाण छूट

रहे हैं, जो सीधे हृदय पर चोट करते हैं। एक विचित्र प्रकार की मोहिनी सी उसकी अंतश्चेतना में छागई है। इसके प्रभाव से पराजय का ग्लानि–जनक भाव उसकी दृष्टि में कोइ मूल्य नहीं रखता। न जय की कामना है और न पराजय की इच्छा!

कहने की आवश्यकता नहीं है कि रोष एवं आक्रोश से चिल्लाते हुए और क्षोभ में कुढ़ते हुए वह सारा मार्ग तय हो गया। परन्तु सामने तो एक पत्थर की चिकनी शिला है जिसपर बूंद पडते ही फिसल जाती है। अब अधिक सिर मारना सब लडकों ने उचित नहीं समझा। खिल्ली उडाती हुई लडकियों की हसी के नीचे वे सब बुरी तरह दब गये। लगता है, जैसे एक हिम–खण्ड सहसा उनके ऊपर टूट पडा है।

महेश चुपचाप धर्म शाला के कमरे में अकेला खडा गर्दन झुकाए सुदूर शून्य में ताक रहा है। यह स्पष्ट है कि अभी तक वह मन विद्ध है। एक विचित्र प्रकार की स्वप्निल भावना से उसका समस्त अन्तःकरण परिवेष्ठित है।

अचानक किसी की हल्की-सी पद-चाप सुनकर उसका ध्यान भंग हुआ। देखा तो विस्मय से स्तब्ध रह गया— आप — ?

इसके पश्चात् महेश मन्त्र–मुग्ध हो एक टक निर्मला के कमनीय मुख मण्डल का अवलोकन करता रहा। उसके चेहरे पर जो सरलता है—जो मधुरिमा खिल रही है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। उसे वह इतनी अच्छी और इतनी सुन्दर लगी—मानो नारी का सहज स्वाभाविक भव्य रूप उसमें मूर्तिमान हो गया है।

प्रसन्न मन के आवेग पर नियन्त्रण करके निर्मला ने तीव्र उत्कण्ठा लिए पूछा– 'आपने अपनी जीप जान-बूझकर हमारी जीप के पीछे क्यों रखी?

'जीप जान-बूझ कर पीछे।'

महेश धीरे से बोला। उसकी आतुर दृष्टि उन कमल-नयनो म पुन डूब गई।

'किसलिए ?"—वह पुन पूछ बैठी।

विलक्षण-बोधक निगाहो वाली हसती आखें !

बस, महेश अब अपने अकस्मात् उमड आए सवेगो को रोक न सका। आधी का एक तीव्र झोका-सा आया और वह पल भर म अपनी अप्रत्याशित तथा अकल्पित लीला कर गया।

निमला सहसा उसकी कापती बांहो के घेरे म आगई।

सम्भवत लडकी ने इस प्रकार के अभद्र एव अशिष्ट व्यवहार की स्वप्न म भी कोई कल्पना नही की थी, अत वह हठात् भौचक्की रह गई। इसके विपरीत वह प्रतिरोध करने के लिए अपने आपको सक्षम करे तब तक महेश क थरथराते होठ ना जुक नम शीतल और रसीले अधरो का स्पश करके एक सुलगता हुआ चुम्बन ल चुके थे।

'छि छि !"—भयभीत नारी कण्ठ घृणा एव विरक्ति स चिल्लाया —"यह क्या बदतमीजी है ?"

वह आपाद-मस्तक सिहर उठी।

लेकिन महेश तो तीर के सदृश्य कमरे के बाहर निकल कर क्षण भर म ओझल हो गया।

विशेषकर दो वर्ष कोई महत्व नहीं रखते। सामान्य जीवन मे वे घटना रहित और निर्विघ्न व्यतीत हो जाते हैं। साधारण तया पता भी नहीं चलता कि वे कब आए और कब बीत गये।

यद्यपि समय का यह लम्बा अन्तराल कइयो के लिए तो चिंता का कारण बन ही जाता है। प्राय उन व्यक्तिया के लिए जिनके यहा जवान और बडी लडकिया विवाह योग्य बठी हैं। उनकी राता की नींद उड जाती है— दिन का चैन क्रमश समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार के एक व्यक्ति हैं ठाकुर तेज सिंह। भाग्य की विडम्बना देखिये कि अपनी छोटी बहिन निमला के विवाह के सम्बन्ध में वे जितन ही चिंतित और प्रयत्नशील रह, उसी अनुपात म सफलता उनस दूर चली गई। इसमें कोई शक नहीं है कि व वाञ्छित

धन देने को तैयार हैं। दहेज मे वे आवश्यक वस्तुएँ देन के लिए इच्छुक हैं जिनसे एक बडी गृहस्थी सरल-ता से बस सकती है। लेकिन सिर फिरे समधी तो इस पर भी राजी नही है। वे कुछ ऐसी शर्ते रखते हैं जिन्हें निकट भविष्य म पूरा करना प्राय सम्भव नही है। उनम स एक है लडके को चार वष के लिए अमरीका आगे अध्यन के लिए भेजना आज की इस बदली परिस्थितियो म इस प्रकार का विचार केवल मात्र हास्य-स्पद है। आज की इस विषम आर्थिक अवस्था क सन्दभ म यह सब कुछ सोचना-विच रना न तो बुद्धि सगत है और न विवेक-सम्मत है। इसके अतिरिक्त वभव की चकाचौंध और यौवन की आधी म यदि लडके का कही अनुभव हीन मन बहक जाय ... तो ... ?

एक प्रश्न वाचक चिन्ह है जिसका उत्तर देने की किसी मे क्षमता नहीं है।

इस सम्बन्ध मे एक विपत्ती और है। पडितो की गणना और जन्म कुण्डलियो की भुन भुनया तो सन्व अवरोध उत्पन्न करती रही है। सारे किये-कराय काम पर एक-दम पानी फेर देती है। दिन डावाडाल रहता है और कलजा आतकित।

आज इस समस्या का समाधान खोजने के उद्दश्य से पडित राम धन भी उपस्थित हुए हैं। य टिगनेकद के सावल से व्यक्ति है। छोटी-छोटी आखें और पतली-पतली मूछें। ललाट पर त्रिपुड तिलक। कुल मिलाकर एक साधारण व्यक्तित्व। यद्यपि बात करन म पटु। निश्चित रूप स इस कला म अत्यन्त निपुण। श्राता तो एक दम मुग्ध हो जाते हैं। पिछले बीस-बाईस साल से इसी की आस पर जीविकोपाजन कर रहे हैं। राजस्थान, मध्य-प्रदेश और गुजरात क राज घराना म इनकी अच्छी प्रतिष्ठा है। छोटे स जागीरदार से लकर

बड़े राजा-महाराजा तक भी इन्हें पूछते हैं। इसका कारण यह है कि ये परस्पर शादी-ब्याह कराने और सम्बन्ध बनाने में एक कुशल मध्यस्थ का कार्य करते हैं, जिसकी भूमिका ये बड़ी ईमानदारी और सतकता-पूर्वक निभाते हैं। वास्तव में इस कार्य के लिए व्यवहार कुशल तथा वाक्पटु होना अत्यन्त आवश्यक है। ये गुण इनमें कूट-कूट कर भरे हैं।

इनके पास राज-परिवारों के विवाह योग्य लड़के-लड़कियों के फोटू मौजूद हैं। इसके साथ संक्षिप्त में इनके शारीरिक गठन से लेकर शिक्षा और रुचि के सम्बन्ध में भी विवरण लिखे पड़े हैं, ताकि सम्बन्धित जिज्ञासु व्यक्तियों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

सर्व-प्रथम फोटू और पत्र के माध्यम से बातचीत आरम्भ होती है, इसके उपरान्त स्वयं उपस्थित होकर सब कुछ निश्चित कर लेते हैं। इन सब के उपलक्ष्य में इन्हें 'सीख' के नाम से पाँच-सौ रुपये तक का पुरस्कार मिलता है। विदाई के अवसर पर 'सिरोपाव' के रूप में रेशमी कपड़े भी मिलते हैं। इस प्रकार का पुरस्कार वर-वधु दोनों पक्षों से अपेक्षित है।

पंडित रामधन ने कहा— "ये देखिये ठाकुर साहब ये रायपुर के ठाकुर गजसिंह जी के सुपुत्र कुँवर हिम्मतसिंह जी का फोटू है। आपको सुनकर प्रसन्नता होगी कि समधि ठाकुर आपकी बहिन को फोटू से देखकर पसंद कर चुके हैं। संयोग से दोनों की जन्म-कुण्डलियां भी मिल गई हैं। बड़ा अच्छा योग है। उन्होंने आपके पास मुझे विवाह की बात पक्की करने के अभिप्राय से भेजा है। आप सोच लीजिए——— ।"

ठाकुर तेजसिंह ने फोटू देखकर पूछा—"क्या आपने कुँवर साहब

निश्चित समय पर शुभ विवाह की जोर-शोर से तैयारियें होने लगी। ठाकुर तेज सिंह और उनकी धर्म पत्नी लाडीमा आवश्यक प्रबन्ध में व्यस्त हो गए। प्राय सम्बन्धी और रिश्तेदार सभी आठ-दस दिन ही पूर्व आ गए। हवेली में कोलाहल छाया हुआ है। सर्वत्र हर्षोल्लास की मन्दाकिनी लहरा रही है। अपनी छोटी लाडली बहिन का विवाह ठाठ से करने का निश्चय करके ठाकुर साहब स्वयं प्रत्येक कार्य का निरीक्षण करते हैं ताकि किसी भी प्रकार की कमी अथवा त्रुटि नहीं होने पाए इस मांगलिक अवसर पर उन्हें माता-पिता की याद बार-बार आती रही। इस शुभ समय में वे होते तो कितने प्रसन्न होते। निर्मला भी जब तब उनको स्मरण करके अवसाद-ग्रस्त हो जाती है-उसका मन तल्लीन मग्न हो जाता है। अत तेज सिंह इस बात का विशेष ध्यान रखते कि कोई ऐसी बात न हो जाए जिसके कारण बहिन के कोमल दिल को अनावश्यक चोट लगे।

विवाह की शुभ घडी भी निकट आगई । हवेली का आगन खूब सजाया गया, जहा विवाह का शुभ काय सम्पन्न होने जा रहा है । वेदिका रग-बिरग सुगधित फूल-पत्तो स शोभायमान है ।

विवाह क दिन बरातियो का स्वागत करन के उद्देश्य से पूरा गाव एकत्रित हो गया । पान, सिगरेट, इत्र, शरबत आदि स अतिथियो का आनद-पूवक सत्कार किया जा रहा है ।

प्रात काल स ही वाद्य-वृद के विभिन्न प्रकार के गीतो से वातावरण मधुर बना हुआ है । मुहूर्त के निकट आते ही वर ने सोने चादी के गहनों स सज घो पर चढ़कर मुख्य द्वार पर लगे तोरण को अपनी तलवार से स्पश किया । इस प्रकार तोरण मारकर विवाह की आरम्भिक रस्म पूरी की । अब वर-वधू गठ-बधन के साथ वर-बद्ध होकर विवाह-वेदिका पर आगए । मागलिक गीतो की बहार आगई । स्त्री कण्ठ सम्मिलित स्वर म गान लगे ।

विवाह भावन एकदम मौन हो गया । उसमें एक प्रकार की पवित्रता छा गई । पडितजी न मत्रो का उच्चारण करते हुए हवन की अग्नि प्रज्जवलित की इसके पश्चात् फेरो का तयारिया होन लगी ।

प्रीति-भोज के अनतर उपस्थित लोगो ने वर-वधू को पूर्ण हृदय से आशीष दिये कुछ सम्बधियों और हितैषियों के द्वारा उपहार भी भेंट किए गए ।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि निर्मला के विवाह के निर्विघ्न सम्पन्न होने के कारण ठाकुर तेजसिंह को बडी तृप्ति मिली ।

सन्ध्या का समय । वर-वधू के प्रस्थान होने का समय समीप आ गया है । इसके लिए पुष्प मालाओं से सुसज्जित एक मोटर कार खडा है ।

बरात की बिदा, वधू पक्ष के लोगो का उदास चेहरा और मुरझाया

बहू ! ये तुम्हारी सासी-सास हैं, इनके पैर छूना ।

तभी एक वृद्धा खिलखिलाकर कहती है—'कुंवरानी सा ! ये बड़ी जिठानी हैं । ये जब तक मुंह दिखाई में सोने का कोई गहना न दें, पैर न छूना ।"

'ये भुवा-सास हैं— ।'

औरतों का यह जमघट चारों ओर से घेर कर बैठा है । यह परिचय का अति पुरातन तरीका है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी से अभी तक चला आ रहा है ।

नई आने वाली बहू इसी परिचय-सूत्र के सहारे अपने भयाक्रान्त मन की पीड़ा तथा दूरत्व भावना को विस्मरण करने का प्रयास करती है और धीरे-धीरे नये परिवार के स्नेह-सरोवर में एक बूंद बनकर आत्म-सात् हो जाती है ।

इस बीच निर्मला का जी घुटने लगा । थकान, ऊब और गर्मी के कारण घूंघट में वह घबराने लगी । लेकिन विवश है । यह परीक्षा-स्थल है । यदि कहीं भी थोड़ी सी चूक अथवा भूल हो गई तो तानों और लाञ्छनों के बाणों से उसके कलेजे को छलनी कर दिया जाएगा—इस सम्भावना से कौन इन्कार कर सकता है । अतः चुप्पी साधे जैसी की तैसी बैठी रही ।

भीगी रात । प्रमोद-कारी आलोक से फूटती हुई रश्मियां । स्वप्न सरोवर का निभृत कूल जहां प्रणय आतुर दो हृदय परस्पर मिलते हैं । एक रागात्मक अनुभूति से परिपूर्ण नये मोहक जीवन ने अपने मौन हर्षोत्फुल्ल चरण रख दिए ।

खिलखिलाती हुई ननद एक बार फिर उनके पास आकर बैठ गई ।

"देखना, भाभी ! आज मैं ऐसा सजाऊगी कि अगर भैया तुम्हारे पैर न चूम लें तो.......।"

"छि, क्यों भाभी को तग करती है कृष्णा !"—दूर की जिठानी झिड़क उठी।

तनिक ठहरकर वह पुन बोली—'मेरी इस देवरानी को शृगार की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे देवर जी तो इस चाद से मुखड़े को देखकर ही रीझ जाएगे —।"

अचानक नई बहू लजा गई। उसके रक्ताभ कपोल क्षण भर को नवनीत की स्निग्धता पा गए।

"वाह, बड़ी भाभी ! तुमने भी एक कही।' — कुछ दबी हसी और छेड़-छाड़ करते हुए कृष्णा न कहा। इतने म सुरमे की सलाई निर्मला की पलकों पर फेरकर वह चिहुक उठी— 'अब देखो बड़ी भाभी ! ये वशीकरण से भरी-भरी आखें—— ।'

जिठानी निश्छल हसी की बौछार छोड़कर बोली—'अरे, इनमें तो कृष्ण-कन्हैया की छवि छिपी पड़ी है— ।"

और इसके साथ हसी की जल-तरग उस कमरे मे पुन गूज उठी। अत म इसी प्रकार हास-परिहास करते हुए नव वधू का शृगार पूर्ण हुआ। एक ओर मुक्त हास का निर्झर छोड़ती हुई ननदें, आस-पड़ोस की लड़कियें व बहूए कुछ देर के लिए अपनी व्यक्तिगत कुण्ठा को भूल गई।

'कितनी प्यारी !"

'देखना, नजर न लग जाए !"

'भाभी के ललाट पर काला टीका भी लगादो "

इस हसी ठिठोली मे काफी समय बीत गया।

यह स्पष्ट है कि पति का निर्णायक उत्तर सुनकर निमला एका एक चुप हो गई। कुछ भी नही बोली। अवाक मुख पर जडी दो आखो से एक बार पति को निहारा और दृष्टि लौटाली।

इस कठिन मौन मुद्रा को देख पति शब्द ढूढते रह गय, मगर आगे कुछ कहने के लिए होठ हिले नही। इसके पश्चात् उदास मन लेकर वे कमरे के बाहर हो गए।

निमला का पति के प्रति प्रेम स्वाभाविक है। उसका हृदय ही नही रोम-रोम उन्हें प्राण-नाथ के रूप मे ग्रहण करने को आकुल है। इसके अतिरिक्त वह स्वय भी उनकी एक आदश जीवन-सहचरी बनने क लिए कृत-सकल्प है।

पहली ही दृष्टि मे वह उन्ह भली-भाति पहचान गई। स्वभाव से वे सरल और शान्त हैं। हृदय विशुद्ध प्रेम से परिपूरण है। उसम

किसी भी प्रकार का विकार नहीं है। निमला प्रथम मिलन पर ही दिल दे बैठी। अब तो रात-दिन साथ रहने की तीव्र आकांक्षा रहती है। वह निकट रहती है तो सर्वस्व भूल जाती है। यह अनुभूति कितनी मधुर है, कितनी सार्थक है। इन्हें भोगते हुए कितने ही सुख के दिन बीत गए—पता ही नहीं चला।

अचरज तो इस बात का है कि सुरा और सुन्दरी का दुर्गुण उनके चरित्र को कलंकित नहीं कर सका है। प्रायः इस प्रकार के दुर्व्यसन जागीरदारों और जमींदारों के लाडले बेटों के विशेष अलंकार बन गए हैं।

आज निमला के मन में अनेक प्रकार की सुख सिंचित कल्पनायें मण्डरा रही हैं। इसी आनन्द और उल्लास के आवेग में उसने पति के समक्ष एक सामायिक प्रस्ताव रखा।

"यदि आपको आपत्ति न हो तो हम कहीं घूमने चलें।"

सम्भवतः पति इसके लिए प्रस्तुत न थे। है चकित रह कर पूछ बैठे—"कैसा घूमना ?

बड़ा विचित्र सा प्रश्न है। यद्यपि तनिक ठहर कर निमला ने स्पष्टीकरण किया।

'मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि कहीं दूर बड़े शहर अथवा किसी हिल-स्टेशन पर सैर करने के लिए चलकर कुछ दिन रहें। अभी मौसम अनुकूल है। विशेष सर्दी भी नहीं है और ।"

"ओह! मैं समझा। हनीमून मनाने के लिए— ।'—पति के कण्ठ में हास्य प्रतिध्वनित हो उठा।

पत्नी का चेहरा अनायास ही अरुणिम आभा पा गया। उसके अधरों पर लजीला मौन छा गया।

इस बीच पति अचानक गम्भीर हो गए । वे उदास स्वर में बोले— 'मैं अभी कहीं भी जा नहीं सकता ।'

निर्मला की आखों से हठात् विस्मय फूट पड़ा ।

'क्यों ?'

"क्या यह आवश्यक है कि प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दिया जाए ?"

सुनकर पत्नी की आखें मुख पर पत्थर सी जडी रह गई ।

कदाचित पति को अपनी स्वर की अनावश्यक कठोरता का आभास मिला । हठात् सकुचा गए । यद्यपि उन्होंने कुण्ठित मन से कहा—"मैं किसी भी अवस्था में यहा से जा नहीं सकता ।'

निर्मला को लगा कि बात एक प्रकार से समाप्त हो चुकी है, अत उसने आगे कुछ भी कहना उचित नहीं समझा ।

पति के जाने के बाद थोडी देर तक वह चित्र-लिखित सी खडी रही और इस अस्वीकृति पर विचार करती रही परन्तु प्रयत्न करने पर भी उसे कहीं भी किसी प्रकार का सूत्र नहीं मिला-जिसके आधार पर कोई सदेह किया जाए अथवा पति की किसी दुर्बलता तथा विवशता के प्रति आशका प्रकट की जाए । अब इस विषय पर मौन धारण करने के अतिरिक्त उसके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है ।'

'वाह भाभी ! तुम भी एक हो !'

कमरे मे प्रवेश करते हुए तनिक आश्चर्य से कृष्णा ने कहा ।

निर्मला चौंकी ! यद्यपि उसे प्रकृतिस्थ होने मे थोडा समय लगा ।

'कसे भला ?'-बडे भोलेपन से किंचित ठहर कर उसने पूछ लिया ।

'लो । सुबह आओ, दोपहर मे आओ शाम को आओ पर हमारी भाभी नई नवेली बनकर बस इस कमरे से चिपकी रहती हैं । भला, इस कमरे मे ऐसा क्या आकर्षण है, जिसका मोह तुम त्याग नहीं सकती ? बताओ तो सही ।'

नटखट भाव लेकर कृष्णा ने भाभी की आखो मे भाका जो शम स अब भुकी–तब भुकी।

"हट, ऐसा नहीं कहती।"

'क्या ?"

अब निमला हस पडी एक निश्छल हसी और हल्का सा चपत अपनी छोटी ननद के गाल पर जड दिया।

'यह सब जानने की तुम्हारी आयु नहीं है।"–हसी के बीच वह चिहुक उठी —"जब हमारे बाके छल रसिया ननदोई घोडे पर सवार होकर तोरण म रने आएगे ।ा— ।'

ओह भाभी ।'

कृष्णा पानी पानी हो गई। उसन निमला के आचल म मुह छिपा लिया।

तुम बडी वसी हो।'

कसी हू, पगली ! तनिक बता तो सही।'

"ऊ हू ऊ हू —मान भी जाओ — वरना —।

' वरना यहा से भाग जाएगी।"

और इसके साथ निमला के मुह से उच्च हास्य निभर सा फूट पडा।

ननद मना करती रही मचलती रही, किन्तु उसकी भाभी उसे रस लेकर छेडती रही–चिढाती रही।

उस दिन सन्ध्या के समय निमला ने कृष्णा के साथ एक नय कमरे म प्रवेश किया। प्राय वह बन्द रहता है। निरीक्षण करती हुई दृष्टि हठात् एक तस्वीर पर आकर ठहर गई। वह चौंक पडी।

'यह—" यह तस्वीर —?'

प्रश्न अधूरा ही उसके मुह से ध्वनित होकर रह गया।

कृष्णा का चेहरा स्नेह की उज्ज्वल दीप्ति से उद्भासित हो गया।

य मेरे छोटे भइया हैं महेन्द्र सिंह।'

असमय म ही देह अचानक पसीने से भीग गई।

तुम इन्हे जानती हो भाभी ? —कृष्णा ने पूछा।

बस निमला ने यत्रवत गदन हिलाई।

'कमाल है!'—कृष्णा के स्वर में आश्चय व्यक्त हो गय—

"इतने प्रसिद्ध क्रिकेट के खिलाडी को भला तुम नही जानती !"

"क्रिकेट के खिलाडी !"

विस्मय से निमला के नैत्र विस्फारित हो गए।

"हा ! क्रिकेट के खिलाडी।'—कृष्णा कहने लगी—' अभी इडिया की टेस्ट टीम के साथ ग्रास्ट्रेलिया गय हुए हैं।"

सुनकर निमला चुप्पी लगा गई।

"बडे भइया की नादी पर आने के लिए टेलिग्राम तक दिए थ, पर आ न सके। अभी पिछले दिनो उनकी चिट्ठी आई थी। उनकी अनुपस्थिती म इतनी जल्दी नादी करने पर वे बडे अप्रसन्न हैं।"

निमला मूक-बधिर सी बनकर सुनती रही जैसे वह अकस्मात् अ तमु खी हो गई।

तनिक हास्य की मुद्रा म मुह बनाकर कृष्णा बोली—' वेचारे भइया को तो तुम्हारे बारे म कुछ भी पता नही है। किन्तु मैंने सब कुछ लिख दिया हैं भाभी ! तुम निश्चित रहो।"

'सब कुछ…।"

निमला के होठ धीरे से हिल और इसके साथ एक झझा के आकस्मिक आगमन ने उसके सम्पूर्ण मन को हिला दिया।

अधेरा बढने लगा। उसकी गहनता ने निमला को सचेत कर दिया।

चलो।

'अच्छा।'

एकान्त !

एक मोह-हीन और आवेग-हीन एकात !

वह पुलि से सीढ़ियाँ चढ़ गया। कमरे में प्रवेश किया तो खिड़की के पास गुलाबी साड़ी म लिपटी एक नारी मूर्ति दीख पड़ी। अपनी सहज बुद्धि से पहचान गया कि ये भाभी हैं। पास पहुंचा। कुछ कहने से पहले तनिक झिझका, तत्पश्चात बोला—"नमस्ते भाभी!

"नमस्ते——।'

अभिवादन के उत्तर म न आँखें नत हुई और न मुख पर कोई विस्मय झलका। लगा जसे महेश उसका पूर्व-परिचित है। सामान्य शिष्टाचार के नाते उसने कहा— मुझे तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।"

महेश चौंक पड़ा। जाग्रत अवस्था म भी उस स्वप्न का भ्रम हो रहा है। उसके मन मे अनेक प्रकार की विह्वल कल्पनायें मंडरा गई। इसके परिणाम स्वरूप चेहरे पर अप्रत्याशित उद्वेग चिह्न प्रकट हो गए और शीघ्र ही सारी देह पसीने से भीग गई।

आप आ——प——।'

जसे महेश के गले मे एक गोला-सा अटक गया।

उसकी इस दयनीय अवस्था पर निमला मद मद हस पड़ी। उसने कहा— तुमने ठीक पहचाना। मैं वही हू—जिसक एक प्रश्न के उत्तर मे……।'

और वह खिलखिला कर हसने लगी।

बेचारा महेश तो असहाय-सा इस हास्य की बाढ मे बह-सा गया। अब उसका कमरे मे खड़ा रहना भी कठिन हो गया। बस, पलट कर चलने के लिए पैर बढाने लगा। तभी वह हास्य का प्रवाह एकाएक रुक गया और इसके विपरीत अधिकारपूर्ण स्वर सुनाई पड़ा— ठहरिये.. — ।

उसके परा म एक मोटी सी बेडी पड गई।

विहसती हुई चितवन से देखकर निमला बोली—"इस प्रकार पलायन करने से कैसे चलेगा ?'

'जी ——जी ।"

महेश की घबराई हुई दृष्टि उन विलक्षण-बेधक ग्राखो से हठ त् टकरा गई।

'हा, देवर जी !"—भाभी कहने लगी— "एसा पलायन कौन करत हैं—कदाचित् तुम्हें नात नही ?"

तीखी दृष्टि से निमला ने महेश को निहारा—जा हृदय की किसी गहनतम गहराई मे एक विचित्र जटिल द्व द की उलझन उत्पन्न करती है।

कुछ देर के बाद विषयान्तर करने के अभिप्राय से निमला बोली— "नाथ" तुम सीधे ही मेरे कमरे मे चले आए हो, इसलिए जल-पान भी नहीं किया है। हाथ मुह धो लो। इस बीच मैं तुम्हारे लिए प्रबध करती हू।"

भाभी जाने लगी तो अपनी आतरिक अधीरता दबाकर मुख पर अत्यत कातर भाव लाकर महेश ने टोका—

"रहने दो भा भी !"

इस बार हठात् उसके मुह से 'भाभी शब्द' विचित्र सा ध्वनित हुआ। सुनकर वह स्वय चकित है विस्मित है।

निमला के अधरों पर मधुर मुस्कान खेल गई।

'अच्छा। यदि तुम्ह कोई असुविधा होती है तो जाने दो।'

अब धीरे धीरे महेश चुपचाप कमरे के बाहर हो गया।

अनजान ही निमला एक दिन कृष्णा का 'नीरू भाभी' बन गई। इस अल्पावधि मे यह परिवतन आश्चय जनक है। परन्तु है यह साथक। इसके अ तराल म घनिष्ठता और मत्री का वह सुख है, जो प्रत्येक के लिए सुलभ नहीं है।

दोनो कमरे म बद रहतीं। दिन भर बात होती। कभी अपनत्व स भीगा स्वर सुनाई पड़ता—कभी आत्मीयता की उष्णता से बरसाती झरने-सी वे खिल खिल कर उठतीं। एक विचित्र प्रकार की आनन्दानुभूति मे उनके ये दिन निर्विघ्न व्यतीत हो रहे हैं।

अचम्भा तो इस बात का है कि सदव का हस मुख तथा विनोद प्रिय महेश इन दिनो बडा गम्भीर और खोया खोया-सा रहने लगा है। उस की हसी कहीं खो गइ है—मुस्कान बुझ गई हैं। लगता है, कहीं ठेस लगी है, तभी ताज फूल सा खिला दिल अकस्मात् मुरझा गया है।

प्राय वह नीरू भाभी की छाया तक से भी कतराकर चलता है। सामने पडने पर उसकी गदन लटक जाती है—चेहरा कुम्हला जाता है। इसके साथ हृदय की धडकन अनायास ही तेज हो जाती है। उसका जी करता है कि वह शीघ्रतातिशीघ्र वहा से टल जाए—बिना किसी वार्तालाप के वह चुपके स निकल जाए। मनकी यह गति विचित्र है—अप्रत्याशित है।

इसके विपरीत कृष्णा तो उसका पिंड ही नहीं छोडती। बद दरवाजा अचानक खट खट की ध्वनि करता है और कृष्णा नीरू भाभी को पकड कर अ दर कमरे म ले आती है। बस, अब हास-परिहास और खेल-तमाशे के कोलाहल म सम्पूण वातावरण मुखरित हो जाता है।

"महेश भय्या ! इस बार तुम्ह पराजय का बडा दु ख है। —कृष्णा चहक उठती।

'पराजय ? '—विस्मय से नीरू पूछ बैठती।

"अरे तुम्हे पता नही।"—बडी नाटकीय मुख मुद्रा बनाकर कृष्णा कहने लगी—"नीरू भाभी ! हमारी क्रिकेट टीम आस्टलिया म 'रबर' हार कर जो आई है।"

'अच्छा !"

सुनकर महेश की आखें अपने आप नीचे हो जाती और ग्लानि की क्षुद्र छाया सहसा मुख पर घिर आती।

कृष्णा का नटखट स्वाभाव यह सब दखी-अनदेखी कर जाता। उसे तो छेडने मे आनन्द आ रहा है। इधर निमला भी मीठी धूप-सी खिल रही है।

'च् - च्—च् ! बचारे भइया जब से आए हैं, अपनी सूरत पर लिखी हार को छिपाने का असफल प्रयास कर रहे है—कि तु——।'

कृष्णा गम्भीर रही, एकाएक हास्य की प्रतिमा बनकर कुछ बोली—" किन्तु ताऊ! आप तो मजाक भी मजाक करते हैं——।"

"चुप …।'

कृत्रिम रोष का प्रदर्शन करके महेश ने उसे डाँटना चाहा लेकिन तब तक कृष्णा उसे जीभ दिखाकर और अँगूठा दिखाकर खिड़की से दूर भाग गई। महेश के होठों पर अब स्वर हीन हँसी की रेखायें फूट पड़ीं।

दिन ढलने पर ये तीनों टहलने के लिए निकल पड़ते। यह उनका दैनिक निश्चित कार्यक्रम बन गया। मोटर कार में बैठकर वे दूर निकल जाते और उसके पश्चात् वे नहर के किनारे किनारे खेतों के बीच में होकर जाने वाली पगडंडी पर पैदल ही बढ़ जाते।

इस समय सूर्य का तेज प्रायः कम हो गया है। पश्चिमाकाश में फैले हुए मेघ-खण्ड धीरे धीरे अग्रसर होकर रश्मि-जाल को अपने आँचल में समेट लेने के लिए आतुर प्रतीत होते हैं। निर्मला तन्मय होकर इस अस्तमान सौन्दर्य का रसपान कर रही है। उसके कपोल एवं कपाल पर बिखरी लटों में वह अरुणिम आभा बड़ी मोहक लग रही है। अकस्मात् ही उसने एक मन्द मुग्ध दृष्टि का स्पर्श भी अनुभव किया। परन्तु बाद में उसका प्रभाव शीघ्र ही समाप्त हो गया। अतः इस अनुभूति को विशेष उसने लक्षित नहीं किया। उस ही भाव में डूबी सामने की ओर देखकर उसने कहा— 'देख रहे हो कृष्णा को, जो बिल्कुल बालिका की सहज स्वाभाविक मुद्रा में गेहूँ की बालियों के संग खेलने लगी है।'

यह सुनते ही महेश चमक उठा। एक बार सामने की ओर देखा, फिर मुस्करा कर बोला—'हाँ। तुम ठीक कहती हो भाभी।'

उन्होंने आगे पग बढ़ाये। एक छोटा सा मौन का टुकड़ा उनके मध्य निःशब्द परिक्रमा करने लगा।

सहमा निमला ने गहरी दृष्टि मे निहारा। अब सकोच-रहित भाव लकर बोली—"सुना है कि तुम कल जा रहे हो।"

"हा।"—महेश ने सोचकर कहा—"भाभी! यह मेरा 'फाइनल यिर है, इसलिए अधिक ठहरना मुश्किल है। यू भी क्रिकेट टीम के साथ जाने से बहुत हानि हो चुकी है।'

"वो सब तो ठीक है, पर—   ।'

अचानक बीच ही म रुक गई निमला। उसके अधरो पर व्यग्या त्मक मुस्कान खेल गई। लेकिन प्रकट म वह कुछ नही बोली। अपने स्वर और शब्दा पर उसने असाधारण तथा असामान्य नियत्रण कर लिया।

'पर क्या भाभी ?

महेश विस्मित रहकर पूछ बैठा।

"कुछ नही कुछ नही कुछ नही ।"

निमला की वह भाव भगिमा क्षण भर म उसके चेहरे पर से अदृश्य हो गई।

आज की डाक से मदन को दो पत्र मिले हैं।

वह होस्टल के अपने कमरे में आ गया। एक आराम कुर्सी पर बैठकर लिफाफा खोला और बड़ी उत्सुकता से पहला पत्र पढ़ने लगा। इसकी प्रेषक है कृष्णा ! इस कारण से घर के क्षेम-कुशल के समाचार जानने की बलवती सहज-स्वाभाविक इच्छा को वह रोक न सका। वह पहली ही दृष्टि में सारा पत्र पढ़ गया। अंतिम पंक्तियाँ कुछ इस प्रकार हैं—

"भइया ! आप भी बड़े वह हो। उस दिन पापा से लौटते वक्त पता नहीं क्या कुछ कह आये, वे तभी से उदास हैं—दुखी हैं। पर भैया जब से भाभी आई हैं, वे हर्ष विभोर एवं आनन्द मग्न दिखाई देते हैं। लगता है जैसे उनके वृद्ध-जीवन में एक बार फिर बसंत की बहार आ गई है—रसवती सावन की बौछार बरसने लगी है। आंखों में प्रसन्नता की नई चमक और मुख पर आवेग पूर्ण उत्साह का नया ओज झलक

श्राया है, मगर श्रबनो उनकी वे आखें खोई-खोई श्रौर धूमिल दिखाई देती हैं। उनमे एक प्रकार का सूनापन भर गया है।""सचमुच भइया, आपने उनके साथ बडा अन्याय किया है। किन्तु वह क्या बात है, तनिक मुझे भी बताओ ? मैं उस दिन पूरा सुन न पाई थी, मैं अब सब जानना चाहती हू। वह अप्रकट रहस्य तो — ।"

बस, महेश इतना ही पढ पाया। सचमुच, कृष्णा ने अपनी मम स्पर्शी भाषा में इतना कुछ लिखकर उसे गहरी चिंता मे डाल दिया। एक प्रकार से उत्साह ठण्डा पड गया। उसने पापा से जो कुछ कहा है वह कोई नई बात नहीं है। एक आशका थी—उस ही तो व्यक्त किया है। यह स्पष्ट है कि सत्य-कथन अत्यन्त अप्रिय एव कटु होता है—उस सुनने की शक्ति बिरला मे हा है""और""। यद्यपि सत्य की निरतर अवहलना की जाती है—उस अस्वीकारा भी जाना है तथापि इससे उसका अस्तित्व थोडे ही मिट जाता है। आखें बद करने स कहीं सूय का प्रकाश अस्त होता है।

कुछ देर तक इम पत्र का ऐसा प्रभाव पडा कि महेश चिंतित अवस्था में सोचता रहा। उसे सुस्थिर एव सामान्य होने म कुछ समय लगा। इसक अतिरिक्त वह दूसरा पत्र बार-बार उसका ध्यान आकर्षित कर रहा है। कौतूहल-वश उस उठाकर देखा—वह भी गाव से आया है। खोला तो ज्ञात हुआ कि यह नीरू भाभी का पत्र उसके नाम है। किंचित् आश्चय उसकी पलको मे अपनी छाया फला गया। उसके मस्तिष्क म कई विचार उठे और विलीन हो गए। जहा तक उसे स्मरण है कि यह उनका प्रथम पत्र है। अन्त मे पढने का निश्चय किया, फिर भी हृदय में अज्ञात सकोच का भाव अनायास ही घिर आया।

प्रिय देवर जी !

सम्भवत इस पत्र को पाकर तुम्हे विस्मय होगा। मुझे भी तुम्हारे

नाम पत्र लिखते हुए कुछ-कुछ सकोच अनुभव हो रहा है। लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें व्यक्त करने की बलवती लालसा मैं रोक नहीं सकी हू। मन का यह भाव यथार्थ मे विचित्र है–अद्भुत है।

सर्व-प्रथम तुम्हारे प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हू। सम्भवत तुम्हे विदित नहीं होगा कि यहा आकर तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है। मेरे जीवन मे राग और अनुरक्ति की अचानक आवेग-पूर्ण एव माह सिंचित रस वर्षा करदी। इसके प्रभाव से मेरे हृदय मे भावनाओ की कुसुम लता खिल-खिल उठी–महक-महक उठी। मनकी कोकिला मुग्ध होकर पचम स्वर म राग अलापने लगी। उस समय मुझे यह ससार कैसा अच्छा लगता–कैसा भव्य प्रतीत होता। ऊपर असम्पृक्त चिर-परिचित आकाश! नीचे दूर-दूर तक फैला धरती का धानी आचल! ठण्डी हवा से मन प्राण उर्मिल। हृदय निर्मल सरोवर की भाँति चचल।

परन्तु यह किसके सम्पर्क का प्रभाव है? किसकी सगति ने यह आश्चर्य-जनक परिवर्तन किया है?—इन प्रश्नो के उत्तर स मैं भली भाति परिचित हू।

आज वही हवेली है। वे ही लोग हैं। यद्यपि उनका हृदय इतना विशाल है—इतना स्नेहिल है जिसक सम्बध म किसी भी प्रकार की आशका तथा सदेह प्रकट करना कठिन है। वह सागर के समान गम्भीर है—निश्छल है। परन्तु कोई बात एसी है, जिसके प्रभाव से कोई अज्ञात अभाव सा अनुभव होता है। सबसे घिरे रहने पर भी नितात एकाकी–जसे अपने में ही सिमटे। एक दूरी का बोध!

कहा है यह हास-परिहास की निर्झरणी! कहाँ है वे रग बिरगे खेल-तमाशे!—अबतो सध्या के समय घूमने का कार्य क्रम प्राय बद सा है। तुम्हारे भाई तो दिन भर काम मे इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हे इस सम्बध म कहने का साहस ही नहीं होता। यदि कभी आग्रह भी

किया जाए तो व सरलता से हसकर टाल जाते हैं। अब रह गई है केवल कृष्णा! वह अपनी ओर से कोई शिकायत का अवसर नही देती, किन्तु— ।

ओह! मैं भी क्या लिखने लगी। कदाचित् तुम्ह खीझ उत्पन्न हो रही है। सोच रहे हो की भाभी कितनी स्व-केन्द्रित होगई है। इस म कुछ स्वार्थ-परता की भावना भी अन्तर्निहित है। आशा है, तुम अन्यथा न लोग। मन की यह विचित्र सी अवस्था अभिव्यक्ती चाहती है—बस!

शेष कुशल।

तुम्हारी

नीरू भाभी

महेश ने पत्र को एक बार पढा, दो बार पढा और तीसरी बार भी पढ गया। प्रतिक्रिया-स्वरूप वह सोचता चला गया। एक हल्की सी बेचनी वह अपने अभ्यतर मे अनुभव करने लगा।

घनी रात का सन्नाटा। हवेली में सर्वत्र मौन। अंधकार भी बिल्कुल सम्भल कर, सतर्क होकर और गहन होकर जम गया। सब सो गए। मुग्ध-भाव से पति के गले में बाहें डालकर नीरू भी किन्हीं अज्ञात स्वप्नों के प्रदेश में उड़ गई। नींद की परियों ने उसे मीठी थपकियें दी वत्सल भाव से अभिभूत होकर तत्पश्चात् वे शीघ्र ही उसकी कजरारी पलकों की गहरी घाटियों में खो गईं।

तभी अचानक भयानक भूचाल सा आ गया। लगा जैसे धरा डोल गई—आकाश टूट पड़ा। वायु में अग्नि-स्फुलिंग बरसने लगे। जल प्लावन की भीमकीय उद्दाम लहरें सारी सृष्टि को ग्रसने के लिए मचल उठीं।

गहरी नींद में निर्मला चौंक पड़ी। सर्व-प्रथम उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया। उसकी सुप्त-प्राय चेतना तनिक जाग्रत हुई। बोझिल पलकों को घबरा कर खोलने का प्रयास किया तो धुंधली-धुंधली दृष्टि

अकस्मात् अंधेरे की सुदीर्घ दीवार से टकरा गई।

इस बीच विद्युत-लहर के एक झटके ने उसके निष्क्रिय विवेक एवं निश्चेष्ट हृदय में सोये हुए समुद्र को क्षिप्र-गति से आलोडित विलोडित कर दिया। उसे ज्ञात हुआ कि बिछावन पर पति एक घायल पक्षी के सदृश फड़फड़ा रहे हैं। उनके मुंह से भयंकर गर्जना निकल रहा है और समस्त गात सूखे पत्ते के समान थर-थर कांप रहा है।

निर्मला हठात् सन्न सी रह गई। अविलम्ब ही वह उठी और बत्ती जलाने के लिए दौड़ी। वह ठीक प्रकार से सम्भल ही नहीं पाई थी कि स्वयं उसने अपनी भौंचक्की आंखों से देखा। वह दृश्य कितना रोमहर्षक है-भयानक है। पति के मुंह से फेन निकल रहे हैं। आंखे पथरा गई। चेहरा किसी आंतरिक-यंत्रणा के दारुण प्रभाव से कसा जा रहा है। हाथ-पैर ऐंठ रहे हैं। एक प्रकार के क्रूर आवेग और निष्करुण संवेग!

यह सर्वथा अकल्पित है—अप्रत्याशित है। पत्नी आपाद-मस्तक कांप उठी। सहसा रात्रि की नीरवता के अंतस को विदीर्ण करके उसका करुण आर्त-नाद सारी हवेली में गूंज उठा। कुछ ही देर में वह सन्नाटे सी होकर फर्श पर लुढक गई। कदाचित् वह इस आकस्मिक तथा असम्भावित आघात को सहन न कर सकी।

बात की बात में सारी हवेली जाग उठी। उसमें उद्वेगजन्य हलचल मच गई। कृष्णा ने नीरू को सम्हाला और उसे अपने कमरे में ले गई। यद्यपि अपने बड़े भाई की दशा देख वह अपने आपको सुस्थिर न रख सकी और हृदय विदारक चीत्कार के साथ भाभी से लिपट गई।

पूरा परिवार विषाद के सागर में डूब गया। सबके दिलों में हाहाकार मच गया। यह दुर्भाग्य का भीषण प्रकोप है, जिसके अंतराल में मानों किसी अनागत अमंगल की काली छाया मंडरा रही है।

ठाकुर साहब तो चीख पड़े। उनकी छाती इस दारुण दुःख से अब फटी-तब फटी।

डाक्टर आये।

सबकी आंखों में केवल एक मूक प्रश्न ?

वे गम्भीर हो गए। मुख पर दुश्चिंता की रेखायें गहरी हो गईं।

कई महीनों के पश्चात् यह मृगी का अत्यंत भयानक दौरा पड़ा है, बड़ा ही प्राण घातक और —   —।

"डाक्टर! किसी भी प्रकार मेरे लड़के को बचा लो वरना मैं बर्बाद हो जाऊंगा। डाक्टर———।"

ठाकुर साहब अत्यन्त कातर भाव लेकर असहाय से रो पड़े।

'मैं प्रयत्न करूंगा ठाकुर साहब! — डाक्टर ने द्रवित होकर आर्द्र कण्ठ से सांत्वना दी— आप धीरज रखिये। मैं इसे अपनी कार में होस्पिटल ले जा रहा हूं और भगवान ने चाहा तो —।'

"ओह! मेरे बच्चे—— ।"

ठाकुर साहब ने अपना सिर पीट लिया।

वृद्ध के होठों पर व्यग्यात्मक मुस्कान खेल गई।

"तुम्हे इसकी चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"—वे कहने लगे—"कानो-कान किसी को पता भी नही चलेगा और एक दिन सुदर-सी बहू इस हवेली मे आ जाएगी— ।

जब यह बात ठकुराइन के कानो मे पडी तो उन पर एक प्रकार का उन्माद-सा छा गया। बस, उठते-बठते वे हर घडी इसी की चर्चा करती–रहती। अब तो बहू इस हवेली मे नहीं आएगी, तब तक व चन से नही बठेगी —यह विश्वास-पूर्वक कहा जा सकता है।

और एक दिन वृद्ध की सहायता से वे असदिग्ध रूप से अपने प्रयत्न मे सफल हो गई। उ होने एक रूपवती उच्च घराने की राज पूत ललना को हिम्मत सिंह के लिए खोज निकाली, जो शीघ्र ही इस हवेली की शोभा बन गई—कुल लक्ष्मी बन गई।

यद्यपि ठाकुर साहब को एक अनात व्यथा सदव अशात बनाए रहती। लगता जसे कोई असतोष भीतर ही भीतर सुलग रहा है। कभी भी वह एक भयकर ज्वाला का रूप ग्रहण करके विस्फोट की स्थिति उत्पन्न कर सकता है—यह सम्भावना आज भी भविष्य के गभ मे छिपी पडी है। इसके विपरीत वे अपने आपको सयत करके चित्त को प्रसन्न रखने मे प्रयत्नशील रहते किन्तु मन उनके वश में नहीं रहता। विक्षिप्त सी अवस्था मे उद्विग्न हो वे रात–रात भर जागते रहते। एक भ्रम को अ तस मे पालकर भला कब तक सम्भावित अनिष्ट के कोप से सुरक्षित रहा जा सकता है! कहीं रेत मे गदन डालने से शतुर-मुग आने वाले सकट से मुक्ति पा सकता है!———

यह स्पष्ट है कि वे दुर्भाग्य के रोप के समक्ष असहाय निरा श्रित और अशक्त खडे हैं। आज स्थिति यह है कि वे अपना सवस्व खोकर भी उन्हें पराजित करने म असमथ हैं।

देखते–देखते कई मास बीत गए। हवेली सूनी प्रतीत होती। उसके जीवन में मृत्यु की विभीषिका का पूरा प्रभाव है। लगता है जैसे उसकी प्राण शक्ति कहीं विलुप्त हो गई है।

ठाकुर साहब दुःखी हैं। अशांति मस्तिष्क को तप्त बनाए हुए है। हृदय की वेदना असह्य है, जिसे वे किसी के समक्ष प्रकट करना नहीं चाहते।

ऐसे ही शोक-संतप्त वातावरण के बीच बैठी है एक अश्रुमुखी नारी। उसके अंतःकरण में एक प्रकार से श्मशान की सी स्तब्धता परिव्याप्त है। आँखें रीती और धूमिल! डूब डूब करता हुआ सम्पूर्ण हृदय को आवृत करती राख-ठण्डी राख! कहीं भी कोई गति न स्पंदन नहीं मानो जीवन के सब चिह्न मिट गए हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि अपनी बहू की यह शोकातुर

अवस्था देख ठाकुर साहब की छाती फटी जा रही है।

एक साधारण-सी भूल का इतना भीषण परिणाम होगा—यह किसने सोचा था ?

रात की सूनी घड़ियों में जाग-जाग कर मन में अव्यक्त बेचैनी लेकर ठाकुर साहब अपने आपको खूब कोसते रहते।

"पता नहीं उस समय बुद्धि पर कैसा परदा पड़ गया था कि— — ?"

इस सर्वनाश पर ठाकुर साहब विक्षुब्ध हो निरंतर अश्रु प्रवाह करते रहते।

"मैंने विश्वासघात करके एक हरी-भरी जिंदगी को उजाड़ दिया है।— यह अक्षम्य अपराध है।"

पाप की तीखी अनुभूति उनके अंत प्रदेश को अचानक अनात मय तथा असह्य आतंक से अस्त-व्यस्त कर जाती। इसका दंश मर्म-विदारी है।

अब ?

एक प्रश्न-वाचक चिन्ह है, जिसकी तह में दारुण यंत्रणा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

इस प्रकार छ: माह निकल गए तो एक दिन ठाकुर तेजसिंह अपनी छोटी बहिन को लेने आगए। कुल की रीति के अनुसार एक बार विधवा बहू का अपने पीहर जाना आवश्यक है। इन दिनों उसके लिए हवेली से बाहर जाना एक तरह से निषेध है। यही परम्परा है। ठाकुर तेजसिंह का आगमन इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए है।

उन्हें अचरज तो तब हुआ, जब ठाकुर गजसिंह क्लान्त-कातर नैनों से उनके चेहरे को देखकर व्यथातुर कण्ठ से बोले—"ठाकुर साहब !

मैं ~ मैं आपका अपराधी हूँ ।"

"अपराधी ?'

हठात् तेजसिंह विस्मित होकर पूछ बठे ।

'हां-हां । अपराधी ।"—रुद्ध स्वर मे वे कहने लगे—'मैंने तुम्हे धोखा दिया है । तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है ।"

इस आत्म स्वीकृति पर ठाकुर तेजसिंह निर्वाक् रह गए। उन्होने पनी निगाहो से ताका । यद्यपि वे उनसे अप्रसन्न हैं । इस बार कुछ कहा सुनी की भी प्रबल इच्छा है । वे केवल यह पूछना चाहते हैं कि आखिर आपने किस दुश्मनी का यह बदला लिया है ? हम भी कुछ पता चले ।—मगर यहा तो स्थिति सवथा भिन्न है । स्वय गजसिंह अ तर्दाह की तीव्र ज्वाला मे जल रहे हैं। उन्हे एक पलका चन नही। लगता है, जैसे अपने किये का दण्ड भोग रहे हैं ।

पहले से ही शोकाकुल अब विक्षिप्त सी अवस्था मे ठाकुर गजसिंह कह उठते हैं— 'ठाकुर साहब ! अब मैंने प्रायश्चित करने का निश्चय किया है ।"

तेजसिंह ने सप्रश्न दृष्टि डाली ।

'कैसा प्रायश्चित ?'

वे उत्तर देते हैं— पाप का जिसे मैंने किया है ।"

"पाप का ?'

"हां । —गम्भीर स्वर मे गजसिंह बोले—"मेरे ऊपर कितने बड़े पाप का भार है, आप नही जानते ।'

इस प्रकार बारम्बार अपने द्वारा किये गये विश्वास-घात को पाप के रूप म स्वीकृति और प्रायश्चित करने की तीव्र भावना से यह स्पष्ट हो जाता है कि व स्वय को एक अपराधी होने के नाते घोर पापी

स्वीकार करते हैं, जिसके कुकर्म केवल पश्चाताप करने से ही समाप्त हो सकते है—यही उनका एक मात्र विश्वास है।

"मैं प्रायश्चित करूंगा ठाकुर साहब, प्रायश्चित——।"

गम्भीर वाणी में बोलकर गजसिंह ने अपना दृढ निश्चय पुनः व्यक्त किया।

"प्रायश्चित——प्राय——।"

ठाकुर तर्जसिंह की बुद्धि भावर-जाल में फंस काठ के टुकड़े के सदृश्य चक्कर काटने लगी।

आज अचानक ठाकुर साहब ऊपर आये। दूसरे कमरे की ओर मुख किया, मगर पलटकर बरामदे को पार करके निमला के कमरे की तरफ बढ चले। यद्यपि वे एक पल के लिए द्वार पर ठिठके, तथापि शीघ्र ही वे भीतर प्रवेश कर गये।

यह एक असाधारण घटना है। प्राय बहू के कमरे म श्वसुर के आने का प्रश्न ही नहीं उठता। निमला फटी आखो से ट ह आश्चय-चकित सी देखती रही। अनायास ही मन म अ यक्त बेचनी उत्पन्न हो गई जिसके अ तराल मे किचित् अज्ञात भय का भी सचार होगया। इसके पश्चात् वह आदर पूवक सिर झुका कर खडी होगई।

ठाकुर साहब के पाव जहा थे—वही रुके रहे। विधवा वेश मे अपनी बहू को एक टक देखते रहे। वह एक साध्वी के समान कसी पवित्र कसी भव्य और कसी गौरव मयी लग रही है, जिसकी देह म दिव्य आत्मा का निवास हो।

क्षण भर के लिए व भाव-लोक मे खो गये। इसके साथ उनके हृदय म एक टीस सी उठी और वे हठात् विचलित हो गए। ओह! इस तरुण अवस्था में वैधव्य का अभिशाप! लगा, जैसे खिली खिली और महकती हुई कुसुम-लता पर अकस्मात् तुषारा पात हो गया है।

"बहू—!"—चिंतातुर मुह से केवल यह सम्बोधन ही ध्वनित हुआ।

'जी कहिए।"—किंचित् आशान्वित हो नीरू बोली।

अब ठाकुर साहब अचानक असमजस एव अनिश्चय की स्थिति में पहुँच गये। आगे कुछ कहने के लिए जसे उनका साहस प्राय चुक गया। आने को तो चले आए, किन्तु इस बहू के आगे मुह खोलने म एक प्रकार की कठिनाई अनुभव हो रही है जो उनकी तत्कालीन मानसिक अव्यवस्था एव दुबलता का ही परिणाम है।

इस अन्तद्वन्द्व में पडकर वे कुछ देर के लिए मौन खडे रहे। यद्यपि उनके चेहरे पर छाया चित्र की भाति भाव आते रहे—जाते रहे। एक दीघ विलम्ब के पश्चात् उमपर गम्भीरता छागई। ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी वह अनिश्चय की भावना पुन दृढ निश्चय म बदल गई है। परन्तु बात कहा म आरम्भ करे—यह समस्या तो बनी रही।

अधिक सोच विचार न करके उन्होने कहना शुरू किया—बहू! आज तुम ही इस हवेली का जीवन-दीप हो, जो अपने तेजस्वी प्रकाश से यहू और छाए अधकार को नष्ट करने की विलक्षण शक्ति रखता है। मेरी उत्कट अभि गपा है कि यह दीप इसी प्रकार जलता रहे और अपने आलोक से हवेली के जीवन को प्रकाशमान करता रहे।'

निमला भय-भरे विस्मय से अवनत-वदन खडी रही। प्रकट मे कुछ बोली नही।

सहसा ठाकुर साहब के मुख का भाव बदल गया। वे एक दीघ

निश्वास लेकर नराश्य-पूर्ण स्वर मे कहने लगे–' निश्चय ही आज इस हवेली की दिल की धड़कन तुम्हारी, प्रत्येक श्वास के साथ चलती है। आज वह तुम्हारे क्रन्दन के साथ रोती है। तुम्हारे आसू उसके आसू हैं। तुम्हारा दुख उसका गहरा दुख है। इस अल्पावधि मे तुम उसका सर्वस्व बन गई हो–इसमे किसी भी प्रकार का सशय नही है।'

ठाकुर साहब के इन उद्‌गारो को सुनकर निर्मला का हृदय द्रवित हो गया। उसकी आख बरबस छल छला आई। उसका मस्तक आत्म-सम्मान की भावना से उन्नत हो गया।

इस बार ठाकुर साहब ने एक अन्तर्भेदी दृष्टि डाली और गम्भीर स्वर मे प्रश्न कर बैठे—"क्या तुम चाहती हो कि भविष्य मे यह हवेली तुम्हारे रोदन के साथ इसी प्रकार आसू बहाती रहे? क्या इस सुख भोग करने की तरुणावस्था म वह एक कठोर वैराग्य का व्रत ले? क्या उसके हृदय का आनन्द और हर्ष का स्रोत किसी मरुस्थल मे जाकर सूख जाय?"

निर्मला चौंक पड़ी। ये कैसी प्रश्नो की झड़ी?––उसकी समझ म कुछ भी नहीं आया। बस, अपनी पुतलियो मे तीव्र जिज्ञासा का भाव लेकर निरुत्तर खड़ी रही।

ठाकुर साहब ने अपनी दृष्टि बहू के चेहरे पर से हटाई और शून्य म ताक कर बोले– इन प्रश्नो को सुनकर तुम्हारा चकित होना स्वाभाविक है। बहू! यह भली भाति ज्ञात रहे कि य प्रश्न निरु–द्देश्य और निष्प्रयोजन नहीं किए गए हैं।

"मैं आपका अभिप्राय अभी तक समझी नहीं।'—निर्मला का मुह खुला का खुला रह गया और वह विस्फारित नत्रों से बोली।

अकस्मात् उनके बीच में मौन का एक लम्बा सा अन्तराल

आ गया। अपनी अस्थिरता को दबाकर ठाकुर साहब कई प्रकार के विचारों के हिंडाले मे झूलते रहे। उनकी मुख-मुद्रा विषाद की रेखाओं से आच्छादित हो इस प्रकार दिखाई दे रही है कि मानों दुख ही मूर्त रूप धारण करके सामने उपस्थित हो गया है।

उसी समय अन्तर्स्रोत को तरल करती हुई भीगी आवाज निर्मला के कानो से टकराई—"बहू ! आज तक मैंने तुमसे कुछ नही मांगा है, इसलिए थोडी झिझक हो रही है। परन्तु आज मैं याचक बन कर तुम्हारे आगे झोली फैलाकर आया हूं। आशा है इंकार नही करोगी।'

हृदय मे गम्भीर विस्मय अपनी छाया फैला गया। प्रश्न भरी आखो से श्वसुर को देखा तब भावनाओ के उद्रेक मे बहकर निर्मला आर्द्र कण्ठ से बोली—"आप मेरे पिता-तुल्य हैं। आप याचक बनकर मत मांगिये, बल्कि आदेश दीजिए—आज्ञा दीजिए। यदि मेरा यह तन-मन आपके किसी काम आजाए तो मैं अपने जीवन को कृतार्थ समझूंगी।'

"वाह ! धन्य है बहू ! मुझे तुमसे ऐसी ही आशा है। आखिर, ने किस बाप की बेटी !'—ठाकुर साहब का कुह्राच्छन्न मन अचानक खिल उठा—अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि पश्चाताप की अग्नि में कदापि जलना नहीं पडेगा।"

जसे ऊचे-ऊचे पहाडी कगारो से टकरा-टकरा कर एक तडपती हुई चीख अचानक दूर दूर तक गूज उठी।

"नही। यह कभी नही हो सकता।"

ठाकुर साहब को एक धक्का सा लगा यद्यपि वे शीघ्र ही सम्हल गये। उन्हें भली भाति ज्ञात है कि यह प्रतिक्रिया स्वाभाविक है—सम्भावित है। इसके अतिरिक्त यह विरोध इतना प्रबल है कि उनके सकल्प को खण्डित करके उसे प्रभाव हीन बना सकता है। अत वे चिता शीर्ण मुख से सकुचाते हुए बोले—'बहू ! यह मात्र तुम्हारे ही हित म नही है, बल्कि इस हवली इस कुटुम्ब और हमारे जातीय-गौरव की परम्परा के कल्याण क लिए अत्यत आवश्यक है। मैं इस प्रकार का कोई अवसर दना नही चाहता कि मरी साधारण सी भूल क पीछे कोई भत्सना करे—निन्दा करे।'

"यह कसा भूल का प्रतिकार है ?"

निमला की आखो म एकाएक रोष एव क्रोध प्रतिबिम्बित हो उठा।

ठाकुर गजसिंह का स्वर आत्म ग्लानि की भावना से तरल होगया।

"बहू ! मेरा सबसे बडा दाष यह है कि मैंने बिना सोचे-समझे हिम्मत का विवाह तुम से कर दिया। यह जानत हुए कि वह एक भया नक रोग स पीडित है। इस बात को छिपाने का मैंने भरसक प्रयास किया, जिसमें मुझे आशातीत सफलता भी मिली। परन्तु इसक ारण स मेरा वह दोष आज एक भयकर अपराध बन गया है—एक महा पाप बन गया है।"

"—— !"

" ——यद्यपि यह सत्य है कि मेरे इस दुष्कम मे मेरे कुछ सम्बधी भी सहभागी हैं—उनकी त्रुटि पूण सलाह को मानकर मैंने यह सब कुछ किया, लेकिन वे सभी दूर खडे तमाशा दख रहे हैं और मैं आत्म-दाह मे जल रहा हू —।"

व्याकुल भाव से गदन लटका कर ठाकुर साहब सहसा मौन होगये। इसक पश्चात् धीर से बोले—"मगर एक अकेल महेश ने मेरे इस विवार का सदव विरोध किया और मैं निरतर उसकी उपक्षा करता रहा।"

अब उनके बीच म हृदयहीन सन्नाटा सा छागया। यद्यपि निमला उत्तजित लग रही है, तथापि सारे बदन म कपकपी सी छूट रही है। उसने कठोर स्वर मे स्पष्ट कहा—'मुझे दु ख है कि मैं आपकी कोई सहायता नही कर सकती।"

ठाकुर साहब के कपोल आसुओ से तर हो गये। उन्होने विगलित कण्ठ से कहा—'बहू ! इसमे कोई सन्देह नही है कि यह जीवन जीने के लिए है, अत घुट घुट कर रोने स भा क्या ! जानती हो

कि आज मैंने भी सीने पर पत्थर रखा है। हिम्मत मुझे बड़ा लड़का होने के कारण बहुत प्यारा था—बहुत लाडला था। निश्चय ही उसकी स्मृति को भूल पाना असम्भव है। परन्तु यह ससार जीवित प्राणियो के लिए है—मृतक आत्माओं के लिए नहीं। यहा भूत नही—जीवित इसान बसते हैं, याद रहे। हमे इस वस्तु स्थिति को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

"दूसरे शब्दो मे आप यह कहना चाहते हैं कि मेरा विवाह एक खेल था—एक फरेब था।'

ठाकुर साहब सन्न से रह गये और अपलक वे निमला के चेहरे को देखते रहे जिस पर अनायास ही विद्रूप का भाव बिखर गया है। वे सम्हल कर कहने लगे—'नही। वह सच था। लेकिन केवल तीन मास के अल्प काल का सोहाग इतने बड़े जीवन म कोई अर्थ नही रखता—कोई मूल्य नहीं रखता। मैंने भूल की है अत उसका प्रतिकार भी मैं करूगा। तुम तो निमित्त मात्र हो। चिंता किस बात की है। यह स्पष्ट है कि तुम्हारा विवाह मैंने धोखे से हिम्मत से करवाया, जब कि उसका असली अधिकारी सुपात्र —।'

'नहीं—नहीं। मरे ऊपर यह अन्याय मत कीजिए—जुल्म मत कीजिए। मैं—मैं मैं।'

अचानक स्त्री-सुलभ—दुबलता ने निमला को ग्रसित कर दिया। इसके प्रभाव से वह टूट गई—बिखर गई। लगा, जसे प्रतिरोध करने का साहस प्राय समाप्त हो गया।

अब ठाकुर साहब विकार—शून्य हो गए। चहरा कठोर हो गया। भगिमा निमम बन गई। यह परिवतन आकस्मिक है—अप्रत्याशित है। लगा, जसे वे अधिकार-च्युत सत्ता के अग नहीं है, बल्कि वे सम्पूण शासन—प्रणाली क एक मात्र नियामक हैं—प्रशासक हैं।

उनकी निरंकुश और स्वेच्छाचारी सत्ता को कोई भी चुनौती नहीं दे सकता।

"तुम वचन दे चुकी हो, बहू!"–ठाकुर साहब ने गम्भीर स्वर म अतिम प्रहार किया।

"नहीं–नही।"

निमला कातर बनकर रो पडी, मगर ठाकुर गजसिंह इसे भी अन-सुनी कर गए।

' — अपने वचन क लिए प्राणो का उत्सग करना हमारा एक परम धम है—एक पवित्र कतव्य है, याद रहे। यही हमारी परम्परा है—यही हमारी मर्यादा है— — ।"

बस, इतना कहकर वे तीर के सदृश्य कमरे के बाहर हो गए! सम्भवत उनका दुबल मन कहीं उन्हे तोड न दे— उनके सुकठोर सयम को छिन्न-भिन्न न कर दे। बस, इसी आशंका ने उन्हें पलायन वादी बना दिया।

कोने कोने म गूज रही है। ध्यान लगाकर सुनो। उनके जमाने और उससे पापु घा मे समुद्र म आज हमारी मर्यादा, परम्परा और जातीय गौरव डूब चुका है। उसी पाप का प्रति-फल हम आज भोग रहे हैं—।'

य मनोद्गार महेश के समक्ष पिता का एक नया स्वरूप प्रकट कर रहे हैं, जो सर्वथा अकल्पित है। उसे तनिक भ्रम हुआ कि आज युगवाणी स्वय मुह से बोल कर उस जैसे अविवेकी नवयुवक को अपने कर्तव्य का बोध करवा रही है। एक पथहीन अथवा पथ भ्रष्ट पथिक क लिए यह दिशा निर्देश है। स्वप्न-द्रष्टा के लिए वास्तविक जीवन की ओर स्पष्ट सकेत है।

"महेश ! मुझे खेद के साथ कहना पडता है कि हमारे देश म तुम जसे नवयुवको का वतमान समस्याओ के प्रति उदासीन और नराश्य-पूर्ण दृष्टिकोण है। व उनसे भागने का प्रयास करते हैं। यह दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति है। आज समाज म दुराचार, अनतिकता विषमता और विसगतियों का बाहुल्य है, उसका सारा दोष केवल नई पीढ़ी पर है, जो उनके विरुद्ध विद्रोह नहीं करती। यदि वे सगठित हो क्रांति का शख नाद करदें तो यह चरमराता हुआ ढांचा एकदम टूटकर बिखर जाय और उसके ध्वसावशेष पर नये प्रगतिशील समाज के अकुर स्वत प्रस्फुटित होने लगे—ऐसा विश्वास-पूर्वक कहा जा सकता है।'

"पिताजी !"

इन शब्दों का महेश पर गहरा प्रभ व पडा तभी तो उसकी निस्तेज आखों में नया आलोक झलक रहा है।

"यदि तुम साहस का परिचय देकर बहू का हाथ थाम लेते और यह अभूत पूव घोषणा करते कि मैं यह अन्याय जीते जी नहीं होने दूगा तो बेटे ! जगदम्बा की सौगध, मेरी छाती गव से फूली नही समाती और और मैं विरोध करने वाले समाज के उन पाखण्डी

ठेकेदारों के सिर तिरस्कार-पूर्वक कुचल देता ---।"

ठाकुर गजसिंह का यह शौर्य पूर्ण वक्तव्य अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हुआ। महेश के हृदय की गहराइयों में वह एक जलती मशाल के सदृश्य उतर गया। प्रतिक्रिया स्वाभाविक है। सचमुच, आज वह अपने आपको इन वृद्ध पिता के समक्ष कितना क्षुद्र, कितना तुच्छ और कितना कायर समझ रहा है, जो केवल अपनी स्वार्थ की परिधी में विवेक शून्य और हृदयहीन बनकर परिक्रमा करता रहता है। एक प्रकार से रूढ़ि-वादी एवं संस्कार-पूर्ण पुराने व्यक्ति में इतना साहस कहां से आगया ? दूसरी ओर है आज के इस नव-युग का एक नव-युवक, जो अपने पिता की आंखों से दृष्टि मिलाने में लज्जा अनुभव कर रहा है। विचित्र विडम्बना है!

वह शीघ्र ही अपने पिता के पैरों में झुक गया और करुण-स्वर में याचना करने लगा—"मुझे क्षमा कर दीजिए ---।"

"कोई बात नहीं।' —ठाकुर गजसिंह का हृदय अपनी इस अभूतपूर्व सफलता पर गद्-गद् हो उठा—"सुबह का भूला यदि शाम को घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता।"

और हठात् छलक आए आनन्द के अश्रु कणों को पलकों में रोक कर पिता ने धीरे धीरे बेटे की पीठ थपथपाई।

अगले मास के आरम्भ म ही जो पहली तिथि मिली उसी तिथि म विवाह-काय सम्पन्न हो गया। उत्सव होगा बड बजगा, प्रीति भोज होगा, मागलिक गीतो की बहार होगी—स्वाभाविक रूप से गाव वालो को एसी ही आशा थी मगर कुछ भी तो नही हुआ। केवल आवश्यक मांगलिक अनुष्ठान ही सम्पन्न हुए। कुछ आत्मीय-परिजनो और निकट क सम्बधियो को आमत्रित भी किया लेकिन उनम से एक भी नही आया। उन सबने एक प्रकार से इस विवाह समारोह का बहिष्कार कर दिया। इस कारण स ठाकुर तेजसिंह भी नही आए। इसम कोई आश्चय नही है कि यह प्रतिक्रिया असदिग्ध रूप स स्वाभाविक है—प्रत्याशित है।

पिता के अतिरिक्त महेश क कुछ मित्र और गुरुजन उपस्थित है। इन्ही ब्राह्मण-बधुआ म से एक ने कन्या-दान का भार उठाया। बडे दु खी मन से ठकुराइन ने दिन भर उपवास किया। फेरो के पूव ही चुपचाप

पने कमरे में जाकर लेट गई। समाचार मिलते ही बेटी कृष्णा दौडी-डी आई।

"क्या हुआ ?"

"कुछ नही।"—मा ने उत्तर दिया।

"फिर लेटी क्यो हो ?"

कृष्णा के मुख पर आश्चय का भाव व्यक्त होगया।

"चलो, फेरे पड चुके हैं और वधू के मुह दिखाई का समय हो रहा है। कही मुहूत टल न जाए।"

'टल जाने दो।"—ठकुराइन की मुख-मुद्रा अत्यत कठोर होगई—"मैं इस पाप-कम म सम्मिलित होना नही चाहती।'

"पाप कम ...!"

कृष्णा हठात् धक सी रह गई।

वर-पक्ष की ओर से भी जिसे उत्सव कहा जा सकता है—ऐसा कोई विशेष आयोजन नही है। केवल चारो ओर सान्गी का शात वातावरण। न हो हल्ला, न शोर-गुल न मीठी गालियो से भरे गीत!

यह स्पष्ट है कि किसी न किसी ने व्याज-निंदा भी की है, परन्तु गाव के अधिकाश व्यक्ति इस काय को बडी उत्सुकता और विस्मय से देख रहे हैं। उन्हे पूण विश्वास है कि अभी थोडी दर म कोई भयकर विस्फोट होगा—अकस्मात कोई अप्रत्याशित घटित होगा और ठाकुर साहब का परिवार सम्मानित सम्बधियो की प्रकोप भरी दृष्टि का आखेट बन जाएगा। परन्तु आश्चय!—पूरा दिन और पूरी रात बीत जाने के पश्चात् भी कुछ नही हुआ। सब-कुछ निर्विघ्न समाप्त होगया। उनकी आशाका निमूल सिद्ध हो गई।

इन सब के बीच म ठाकुर गजसिंह एक विजेता की भाति गदन

ऊँची किए खड़े हैं। उनके चेहरे पर कोई लज्जा एवं ग्लानि का किंचित् मात्र भाव नहीं है। उनके चमकते हर्ष-विह्वल नेत्रों से स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि वे मनगर्वीला से सहज ही में मुक्ति पा चुके हैं। वे अपने अभियान में पूर्ण रूप से सफल रहे हैं। अब तो वे सन्तुष्ट हैं—प्रसन्न हैं।

यह बात वे किसी भी प्रकार भूल नहीं सकते हैं कि उनके रक्त ने समय पड़ने पर उन्हें धोखा नहीं दिया—उनके बेटे ने उनके साथ विश्वास घात नहीं किया। इस कारण से उन्हें समाज के सम्मुख नीचा नहीं देखना पड़ा। उनका गर्वोन्नत मस्तक किसी के आगे नहीं झुका। उसी के सहयोग का सुपरिणाम है, जो वे अन्याय का प्रतिकार करने में सफल हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त बहू—निमला—ने भी अपूर्व साहस का परिचय दिया है तभी वे अपने माथे पर लगे पाप-कलंक को धोने का अभूत पूर्व तथा असाध्य प्रयास कर सके हैं। इसके लिए वे निर्मला के हृदय से आभारी है—कृतज्ञ हैं। निश्चय ही इस प्रकार रूढ़िवादी परम्पराओं और कुसंस्कार-पूर्ण ढकोसलों का मूलोच्छेद नहीं किया जाएगा तो सामाजिक न्याय की स्थापना कैसे होगी?

मन में असीम पुलक का भाव लेकर ठाकुर साहब ठकुराइन के कमरे में गये जहां वे बिछावन पर आहत पक्षी की भांति छटपटा रही हैं।

गर्जासिंह हसकर बोले—"अरी भागवान! देख, कौन आए हैं।'

ठकुराइन चौकन्नी होकर उठ बैठी। फुर्ति से आंसू पोंछकर वे वर वधू को टकटकी लगाकर देखने लगी।

एक पल—दो पल!

पता नहीं चला कि कितना समय बीत गया। वे तो भाव विभोर हो इस 'राधा-कृष्ण' की जोड़ी को अपलक निहारती रहीं। अकस्मात् उनके हृदय की सूनी घाटियों की गहराइयों में से वात्सल्य की अमृत धारा प्रवाहित होगई और देखते-देखते समस्त अंतःकरण को आप्लावित कर

गई। अब उसमें मन की जलन, हृदय का आक्रोश और बुद्धि का क्रोध अपने समस्त विकार लेकर सदा के लिए डूब गये।

तभी ठाकुर साहब ने कहा—"ठकुराइन! अपने बेटे-बहू को—शुभ आशीर्वाद दो।"

तत्क्षण ही इसका अनुकूल प्रभाव पड़ा। ठकुराइन आँखों में आनन्दाश्रु लेकर अकम्पित एवं अम्लान स्वर में बोली—"जीते रहो...जी...ते...र...हो।"

और इसके साथ भावावेश में उन्हें छाती से लगा लिया।

सारा दृश्य इतना करुणाप्लावित होगया कि ठाकुर गजसिंह और कृष्णा भी अपने अश्रु-स्रोत को रोक न सके। बहू की तो हिचकी बंध गई। मदन की भी आँखें भर आई। परन्तु अब यह स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि इन आँसुओं की बाढ़ में वह यन्त्रणा-पूर्ण दुःसह अतीत बह गया है, जिसने इस परिवार के टूटने और बिखरने की दुर्भाग्य-पूर्ण विडम्बना उत्पन्न करदी थी।

और वह हँसती हुई कमरे के बाहर चली गई।

'सटाक' से द्वार भी बंद होगया, यद्यपि द्वार के पास रुकी हँसी की जलतरंग कुछ देर तक बजती रही।

आज कोई थकान नहीं है—आलस्य नहीं है। अब निद्रावस्था में बार-बार चौंक पड़ने का कोई कारण नहीं है, नहीं है वह भयभीत हिरनी सा भाव, जो नई आई बहू के लिए एक अपरिचित वातावरण और एक अनजान परिवार में स्वाभाविक है—अपेक्षित है। बस, यौवन का मधुर उन्माद लिए कमरे में अकेली बैठी है निमला-अवगुंठिता। उसकी मिलनातुर भावों की दृष्टि अपने परों पर जम गई।

'नीरू—!'

चिबुक पर उंगलियों का स्पर्श जैसे सारी देह को सुलगा गया। खुली हथेलियाँ एक दूसरे से टकराईं और शीघ्र ही उलझ गईं। नई चूड़ियों का शब्द बड़ा ही मीठा सा खनक गया। रागात्मक दृष्टि उस सलौने मुख पर टिक गई। हठात् उसके अधर थरथराए और मचलती हुई कामना उस पर बिखर गई। सुलगते हुए होंठ तनिक फड़के और

दिल से दिल मिला—आँखों से आँखें मिलीं। भावावेश का तीव्र झोंका आया। इसके पश्चात् चिर विरही हृदय मानो अलौकिक सुखानुभूति में सदा के लिए खो गए।

जीवन के प्रति प्रेम और मोह मनुष्य के लिए निश्चित रूप से स्वाभाविक है। यह अकृत्रिम भावना बाल्य-काल से ही उसके अंदर उत्पन्न होती है और कालान्तर में वह परिपक्व भी हो जाती है।

अनुरक्ती।

नीलाकाश के सदृश्य विस्तृत जीवन का आधार! यह सच है कि दो हृदय का संगम विरक्ता और घृणा के काले अंधकार को मिटा देता है। इसके प्रभाव से परिस्थिति-वश टूटने और विलग होने की दुर्भाग्य-पूर्ण प्रक्रिया प्रायः समाप्त हो जाती है। परिणाम-स्वरूप एक समझौता परक और समन्वय-वादी विचार धारा निश्चित रूप से रक्षा करने में सहायक सिद्ध होती है यह दृष्टि-कोण सर्वथा विवेक-सम्मत एवं बुद्धि सगत है। यह स्वस्थ्य और जीवनोपयोगी परम्परा चिर काल से अक्षुण्ण चली आ रही है।

'निमता के वीरान और सूने जीवन में झूमता हुआ श्रावण-मास रस-वर्षा करने लगा। आल्हाद और हर्ष की हरीतिमा दिन-प्रति-दिन विस्तार पाने लगी। वही आनंदानुभूति नव-प्रस्फुटित पुष्प के सुवास के सदृश उसके हृदय-प्रदेश को सतत सुवासित रखती। वह एक प्रकार से आत्म-विभोर सा होगई।

जसे ही अर्ध रात्री का सन्नाटा घना हुआ, सहसा निमता चौंक उठी। उसे लगा कि भीतर से बंद कमरे का द्वार किसी अज्ञात करों से ममर का स्वर करके मौन हो गया। पता नहीं कौन उसके पलंग के पास खड़ा धीमी सी आवाज में पुकार रहा है। बस उसी समय उसकी आंखें खुल गईं। अपने को निवसना देख वह अत्यन्त घबरा गई। अब वह यथा सम्भव अपने आपको सुव्यवस्थित करने का प्रयास कर रही है।

यद्यपि वह छाया तब तक उसके दृष्टि-पथ से ओझल हो गई—केवल उसकी पीठ ही की थोड़ी सी झलक दिखाई पड़ी। उसे कुछ इसी प्रकार का भ्रम हुआ।

अब नीरू अपने आपको सुस्थिर न रख सकी। एक हल्की सी भयाकुल चीख उसके कण्ठ से हठात् फूट पड़ी।

महेश तो गहरी नींद में सोया पड़ा है। पत्नी की सुराहीदार गदन में राग भरी अनुराग भरी बाहें डालें वह मधुर-स्वप्न देख रहा है। इसी कारण उसके अधरों पर कभी मीठी सी मुस्कान खिल उठती है तो कभी हृदय-ग्राही स्वर-हीन हंसी छाया की तैर जाती है। लगता है जैसे एक युग के पश्चात् उसका तृषित मन एक स्नेहाश्री हृदय का वाञ्छित आश्रय पाकर सुधा-सिक्त हो गया है।

हठात् उसकी निद्रा भग हो गई। उसने अलसाई सी आंखों से देखकर पूछा— नीरू! क्या हुआ?'

निमता द्वार की ओर दृष्टि गड़ाये थर थर कांप रही है। उसने

कोई उत्तर नहीं दिया।

"क्या बात है ?'

पुन पूछकर मह॰न भी द्वार की ओर सशंकित निगाहों से देखा, मगर वहा तो सब कुछ शान स्थिर !

पत्नी की भाव भगिमा नहीं बदली। वह भय ग्रस्त कपोती की भाति बद दरवाजे की ओर टकटकी लगाए हुए है।

चान्दी का एक छोटा सा टुकडा खिडकी म से आकर फश पर बिछ गया है। उसके मध्यम प्रकाश म कमरे की सारी वस्तुओं की रूप रेखायें स्पष्ट हो गई ह। इसपर भी फुर्ति से महेश ने बत्ती जलाई और पत्नी के पील चेहरे को देख कर अवाक् रह गया।

चारा ओर उजाला फल गया। कमरे को पूरी तरह प्रकाशमान कर गया। इतनी देर पीछे मानो निमला की वाक्-शक्ति लौट आई। आखा म भय की छाया सिमट गई। तीव्र विकृत कण्ठ से बोली—

"अभी — अभी · कोई कमरे में आया था—— और —— और—— मेरे सिरहाने खड होकर — ।"

बस, कण्ठ-स्वर अवरुद्ध हो गया। अ त म उसके कपोल आसुओं स भीग गय। पति की छाती में मुह छिपाकर वह केवल असम्बद्ध शब्द ही बोल पाई— "वह वह कौन——क्या आया— ?"

महेश के नैत्र विस्फारित हो गए। उसमे भय मिश्रित-विस्मय की छाया घनीभूत हो गइ।

द्वार बद फिर —फिर कौन – कैसे— आया ?'

उस लगा कि भ्रमित बुद्धि एक अनन्त चक्कर में पड गई है, जिसका न तो कोई ओर है न छोर। बस, चक्कर ही चक्कर !

आज फिर निमला का मन अचानक क्षुब्ध एवं अशांत होगया। उसके भाल पर स्वेद कण चमक आए। अपने भय और अपनी व्यथा को सदव वह अवचेतन म धकेलती आ रही है। यद्यपि आज पुन वह विक्षिप्त सी होगई है। चाहकर भी वह अपने आपको सुस्थिर एव सुव्यवस्थित नहो कर पा रही है।

वह अभी तक इन दिनो पति के साथ व्यवहार की व्यथता को सहती आ रही है। वह बाहरी दिखावा भर है मगर अब बोझ सा बनता जा रहा है। वह विवश सी इसे ढोती जा रही है। इसके विपरीत अब वह भीतर से धीरे धीरे महेश के प्रति एक विचित्र प्रकार की अश्रद्धा, अप्रेम और अनास्था की अकृत्रिम भावना से भरती जा रही है। यह परिवतन आकस्मिक भी है और साथ ही अप्रत्याशित !

पति ने चिंतित स्वर में पूछा—"नीरू ! इस प्रकार मुह लटकाये

कैसे बठी हो ? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ना ?"

सम्भवत पत्नी ने इस औपचारिक प्रश्न का उत्तर देने की आवश्य कता नही समझी । वह मौन रही ।

अब पति ने गम्भीरता पूवक कहा—"मैं पिछले कई दिनों से देख रहा हू कि तुम्हारे हृदय की यह अनावश्यक भय-जन्य पीडा और व्यय की चिंता काली घटा बनकर तुम्हारे सम्पूण जीवनाकाश पर छा गई है । प्रतीत होता है कि इससे परित्राण पाना प्राय सम्भव नही है —।"

इस बार निमला के मु ह से एक सद आह निकल पडी । इसके साथ म तर्पीडा की मार्मिकता उसके सूखे होठो पर अनायास ही थरथरा गई ।

"जिसके भाग्य म केवल ——।"

तभी उसकी आखें बरबस छलक आई । आगे के शब्द जसे उस में बह गये ।

उस नराश्यपूण अधूरे उत्तर से महेश को एक ठेस-सी लगी । यद्यपि उसका करुणाद्र हृदय सहज ही म इसे सहन न कर सका ।

'भाग्य की बात करने वाले प्राय यह भूल जाते हैं कि भाग्य का निमाता स्वय मनुष्य है ।"

हठात् पति के स्वर में व्यग ध्वनित हो उठा ।

निमला अभी तक विकार-ग्रस्त है—भयाकुल है । चिंतित मन स्थिती लेकर वह गदन झुकाये चुपचाप बठी है । लग एसा रहा है कि पति के ये शब्द चिकने पत्थर पर बू द के सदृश्य गिर कर फिसल गये ।

पत्नी की यह अवस्था देख महेश का मन सहानुभूति एव संवेदना से एकाएक भीग गया । उसके चिकने-चमकीले बालो को उसने सह-लाया और अश्रु-पूरित कपोलो को चूमकर धीरे-धीरे कहने लगा—

"नीरू ! यह सब तुम्हारे मन का भ्रम है। न तो कोई रात को आता है और न तुम्हारे पलग के पास खड़ा रहकर पुकारता है। यदि आत्म-विश्वास के प्रकाश से अपने मन के अंधेरे को दूर करने का प्रयत्न करो तो— —तो —।"

महेश के होठों ने पुन पत्नी के गालों को उष्ण कर दिया।

इसके विपरीत निमला के मुह का स्वाद जसे बिगड गया। कोई कडवी चीज जीभ को छू गई। पति का यह प्रेम-पूर्ण व्यवहार भी उसके मनरुण कातर हृदय को बहला न सका। वह एक प्रकार से विमुख हो गया। उसके अन्तराल मे घृणा एव विरक्ती का सम्लिष्ट भाव अकस्मात् गहरा होगया।

'नहीं——नहीं —।'

निमला पति की बाहो से छिटक कर दूर खडी हो गई।

महेश तो दग रह गया।

नीरू ! यह क्या ?

शून्य में ताकत हुए अपने मन की वितृष्णा को दबाकर वह आद्र कण्ठ से बोली—'यह— यह गलत है—।'

"गलत ?"

महेश की आखो में प्रश्न चिह्न तर गया।

अचानक निमला वर्षोन्मुख मेघ खण्ड की भाति बरस पडी। अपने ही मन पर अपना अधिकार नही है ! विवश है— ! निरुपाय है ! क्या करे ?

अत अपने अश्रु प्रवाह के बीच वह आतुर रुद्ध वाणी मे कहने लगी—"मैं आज तुम्हे स्पष्ट बताती हू कि वह कोई अन्य अथवा अपरिचित नही है, बल्कि तुम्हारे स्वर्गीय भाई की भटकती हुई आत्मा है, जो———।"

"क्या ?"

महेश मानों रसातल मे गिर पडा। उसके रोगटे खडे होगए। इस पर भी कुछ क्षणों के उपरात सशय उसके अ त करण म अपनी धु धली छाया फना गया।

" मेरे स्वर्गीय भाई की आत्मा — ।"

एक बियाबान जगल जिसका न तो कोई ग्रोर है न छोर। उसमे भटक रहा है एक पथिक। उसका न तो कोई उद्दश्य है और न कोई ग्रभीष्ट। मात्र किसी ग्रज्ञात सकेत के निर्देशानुसार वह यत्र चालित सा ग्रागे बढ रहा है। धुमिल सी रीती ग्राखें, जिनकी पलको म दु स्वप्न की ग्रातुरता कालिमा बनकर छा गई है। सवत्र एक ग्रभाव। उसके ग्र तराल म जसे जीवन का ग्रस्तित्व सिमट कर रह गया है। सबसे घिरा रहने पर भी नितात एकाकी। इसके ग्रभ्यतर मे मानो सम्पूर्ण गति ग्रवरुद्ध होगई है। एक पगु ग्रौर ग्रसहाय सा भाव। उसके प्रभाव से दूरत्व की परिधी निरतर विस्तार ले रही है। उसकी ग्रस्त-व्यस्त मनोदशा कैसे-कैसे छाया चित्र दिखलाती है—यह सकना कठिन है। लगता है, जसे कोई ग्रदृष्ट शक्ति सकेत कर रही है — ग्रौर ——

इसकी स्पष्ट प्रतिक्रिया सव प्रथम यह हुई कि एक पलग के स्थान पर दो होगए—एक बिस्तर के साथ दूसरा लग गया। किन्तु कालान्तर

में वह भी बदल गया। अब तो स्थिति यहा तक बिगड चुकी है कि इसके फल स्वरूप अलग अलग कमरो म रहने की व्यवस्था की गई है। कसी विवशता है—कसी विडम्बना है। निमला किसी भी अवस्था मे पति के साथ एक ही कमरे मे रहने के लिए कदापि प्रस्तुत नही है।

भय जनित वेदना का दश। उसकी नस-नस मे एक सिहरन सी पैदा कर देता है। निरतर जागरण के कारण आखों के डोरे तन गय हैं। उनकी लाल-लाल पलको मे अनन्त मीठी-कड़वी-स्मृतियो के छाया चित्र परिक्रमा करते रहते है।

वह आज भी भूल नहीं सकी है। इसके विपरीत उसे सब कुछ ज्यो का त्यो अभी तक स्मरण है। वह रमणीक परिवेश—वह प्रलुब्ध वाता वरण। वह वड की मधुर ध्वनि–स्त्रियो के मागलिक गीत! वेदी के समक्ष मत्रोच्चारण करते हुए पडित! उसकी सहेलियो का दूल्हे से हास-परिहास! क्षण क्षण मे उनका लजाना। उषा सी खिलती सलज्ज *मुस्कान! धूप सी उजली मनोहारी हसी! बस, य अतीत स्मृतियां रह-* रह कर कचोटती हैं।

एलबम!

उसमें विभिन्न प्रकार के चित्र सग्रहीत हैं। प्रथम शादी के अवसर की य सजीव झलकियें प्रस्तुत करते हैं। तत्काल अ दर ही अ दर एक टीस सी उठती हैं और वह घुटती है।

कुछ दिनो तक महेश भी सन्नाटे मे रहा। वह ठीक से समझ न सका। इस दु ख का कारण क्या है? उसने सोचा—पुराने क्षण याद आगये हैं। सम्भव है थोडी देर की भावुकता है। समय आने पर यह विकार स्वत समाप्त हो जाएगा।

परन्तु ऐसा कुछ भी नही हुआ। उसने देखा कि नीरू के दिल में एक काटा सा चुभता है और वह तडप-तडप उठती है। अब तो उसे

धीरे धीरे यह वि वास होता जा रहा है कि नीरु इस हवेली म दु सी है। उसके साथ कभी सुखी नहीं रह सकती। यह किसी भी प्रकार उस सात्वना नही दे पाता।

यद्यपि प्रत्येक बात को सहन करने की भी एक सीमा होती है।

निमला अपने पलग पर उल्टी लेटी तकिये को गीला कर रही है। कई दिनो क सूख बिन सवरे केस अधिक बिखर गये हैं। सई क फैल काटे मानो उसके अ तस की पीडा को अधिक सघन बनाकर आखो क अधरे से ओस-कणो के सदृश्य प्रवाहित हो रहे हैं।

पीछे खड़े महेश से अब रहा नहीं गया। उसन सव्यग मुस्कराते हुए कहा—'सूरज ढलता है और आकाश विभिन्न प्रकार के रग बदलता है। उसी तरह तुम्हे भी रग बदलते देख मुझे अपार विस्मय हो रहा है। समझ म नही आता कि कौनसा रग सच है और कौन सा—' ।

उसकी जीभ सहसा अटक गई। परन्तु ये शब्द अपना वास्तविक प्रभाव हृदय पर छोड गये। निमला के अश्रु पूरित नत्र विस्फारित होगए, जिनमे एक प्रश्न है।

यद्यपि अपने क्षोभ को दबाकर आसू पोछते हुए धीरे से उसने पति स पूछा— क्या मतलब ?"

क्षण भर के लिए महेश चुप रहा। पता नही क्यो आज वह धीरे धीरे नीरू के प्रति अकारण ही कठोरता को प्रश्रय दे रहा है। वह चाहता है कि उसके दिल पर निमम आघात करें, ताकि यह बाह्य मिथ्या आवरण किसी भी प्रकार अनावृत हो जाए।

उसने बड़ी निदयता से कहा—"नीरू! अब यह स्पष्ट होगया है कि तुम मुझे बिल्कुल प्यार नही करती हो और न ही मुझे पति के रूप मे स्वीकार करने के लिए तुम्हारा मन तैयार है। किसी कारण वश और किसी विवशता के अधीन तुमने पति-पत्नी के पवित्र सम्बधो के प्रति

एक कृत्रिम ढोंग रच रखा है, जो किसी भी अवस्था म सह्य नही है—सायक नहीं है ।"

सुनकर निमला तो स्तब्ध रह गई । उसने स्वप्न मे भी नहीं सोचा है कि पति निमम बनकर इतनी गहरी चोट भी कर सकते हैं ।

इसी उत्तेजना मे महेश पुन कहने लगा–" यह स्पष्ट है कि तुम आज मुझ से ऊब चुकी हो । मरे स्वर्गीय भाई साहब की आत्मा दिखती हैं या और कोई—यह सब बहाना मात्र है । तुम मुझे मूख बनाने के उद्देश्य से यह सब नाटक करती हो । रात मे कभी कहती हो कि द्वार के निकट कोई खडा है पलग के पास आकर कोइ धीमे स्वर मे पुकार रहा है । यह सब क्या है !"

"नही नही !"

निमला अब अधिक सहन न कर सकी । अचानक गला फाड कर चिल्लाई ।

लेकिन महेश तो अप्रभावित सा खडा है । उसका चेहरा रोष से कसा जा रहा हैं । वह विवक शून्य और हृदयहीन बनकर बोला—"अब मैं भली-भाति समझ गया हू कि तुम्ह मेरे साथ रहने में दुख होता है मरे समीप रहने पर तुम्ह कष्ट होता है । मेरा सशय अब विश्वास म बदल रहा है कि तुम्हारी आखो मे किसी दूसरे की मूर्ति डोल रही ह तुम्हारे दिल म मेरे प्रति कोई श्रद्धा नही, आस्था नही प्रेम नही——"

"नहीं । यह मिथ्या आरोप ह ।

आवेश म निमला करुण स्वर म रो पडा ।

'हे भगवान ! मैं आज यह क्या सुन रही हू——।'

रोदन क बीच दोनो हाथो मु ह ढापकर निमला सिसक उठी ।

परन्तु महेश तो जैसे पत्थर की शिला बन गया ह मोह–हीन प्रभाव रहित और भावना–शून्य । उसकी कठोरता से किसी के कातर मर्म टकरा

टकरा कर छिन्न-भिन्न हो गये ह।

"——तुम्हारा यह बधु-हीन और नि गग जीवन तथा अनुराग शून्य भाव तो मेरे प्रति केवल तुम्हारी घृ । और विरक्ती का ही परिचायक ह। इसमे अब कोई सदेह नही रह गया ह। भला इसी में हैं कि तुम मेरा त्याग करदो, ताकि यह अभिनय एव आडम्बर प्रदर्शन समाप्त हो जाए और हम वास्तविक जीवन ग्रहण कर सवे-स्वीकार कर सके। यद्यपि मेरी ओर से तुम्ह पूरा अधिकार होगा कि —कि —।'

बस, इतना कहकर महेश चला गया। लेकिन उसके पीछे घनी देर तक रोदन स परिपूर्ण शब्द कमरे मे गूजते रहे।

'नही——नही ——नही ।"

क्षण भर का विलम्ब भी उनके लिए असह्य होगया और वे बिना किसी तनाव की चिंता किये रायपुर के लिए प्रस्थान कर गये।

यह स्पष्ट है कि यहां नये सिरे से देखने के लिए कुछ भी नहीं है। खोज करने के उपरांत भी यहां कोई ऐसा कारण नहीं मिला, जिसके अन्तर्गत निर्मला के प्रति सुसराल वालों के अस्वाभाविक एवं अभद्र व्यवहार का परिचय मिलता हो। ठाकुर गर्जसिंह तो उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न होगये वे हृष विह्वल स्वर में बोले— धन्य भाग हमारे, जो हमारी हवेली में आपकी चरण रज पड़ी।"

अनकानेक शंकाओं से युक्त ठाकुर तेजसिंह का मन एकाएक सन्नाटे में आगया। सब कुछ कल्पना के विपरीत है। यहां के रंग ढंग देखने के पश्चात् किसी भी प्रकार की आलोचना नहीं की जा सकती। आश्चर्य! —वे समधि के स्वागत का तिरस्कार न कर सके।

'क्षमा करना ठाकुर साहब! —गर्जसिंह ने अपने हृदय की आशंका भिभकते हुए व्यक्त की— 'कहीं आप मेरी बहू को लेने तो नही आ गए हैं? किंतु याद रहे मैं यह अन्याय कभी सहन नहीं करूंगा।"

इस स्नेहालाप को सुनकर तेजसिंह हंस पड़े।

"नही। आपकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं होगा।"

तनिक आश्वस्त होकर गर्जसिंह ने कहा—"निश्चय ही यह आपकी बड़ी कृपा होगी।"

इधर तेजसिंह जब जनानी ड्योडी पर ठकुराइन के समक्ष मुजरा करने गये तो कुछ इस प्रकार के विचार उन्होंने भी प्रकट किये। अब तो वे स्वयं चक्कर में पड़ गये। सोचने लगे—इस सौम्य और सुख की खिली—खिली धूप में यह कड़वापन लिए धुंधला बादल कहां मंडरा रहा है?

प्रश्न तो अनुत्तरित ही उनके मन के अंतराल मे ध्वनित होकर रह गया।

अब तेजसिंह बहिन निमला के कमरे मे पहुँचे। वह खिडकी के पास मुरझाई लता के समान खडी दिखाई दी। विवर्ण चेहरा, मानो सारा रक्त खत्म हो गया है। उदास सूखे होठ, जिनपर अव्यक्त पीडा की थर थराहटें पपडियो के रूप म जम गई हैं। आखो के नीचे काले घेरे, जिनमें आत्म—यत्रणा का प्रतिबिम्ब स्पष्ट झलक रहा है।

भाई की निरीक्षण करती हुई संवेदनाशील दृष्टि एक स्थान पर ठहर गई। लगा, जैसे उनके मुख मण्डल पर विषाद की छाया उतर आई है। बस, निमला टूटी लता के सदृश्य भाई की छाती पर ढेर होगई और मुह छिपा कर वह करुण स्वर म सिसक पडी।

अचानक इस स्पर्श ने उन्हें चौंका दिया। अन—जाने ही उनका अन्त करण द्रवित हो गया। उनके हाथ बहिन के सिर को सहलाने लिए आतुर होगए। उनकी आखो म वात्सल्य और करुणा के भाव झलक आए। वे मृदु—मृदु कण्ठ बोले—' नीरू ! अब चिंता की कोई आवश्यकता नही है।'

इसके साथ तेजसिंह ने अपने उमडते हुए आसुओ का घूट पी लिया।

कितनी दुबल होगई है नीरू !'

अपने अश्रु-स्राव को रोक कर लाडोसा ने अपनी लाडली ननद को छाती से लगा लिया। यद्यपि उनके होठों पर उसके सुसराल वाला के प्रति अनायास ही एक मोटीसी गाली मचल उठी तथापि वे ऐसा न कर सकी। इसका भी कारण है। ठाकुर तेजसिंह ने वहा की यथाथ स्थिति का जो वणन किया है वे सुनकर दग रह गई। उन लोगो का आत्मीयता से परिपूण व्यवहार अत्यत ही प्रशसनीय है। कहते हैं कि निमला की छोटी ननद तो सजल नेत्रों से अपनी भाभी स प्राथना करने लगी— तुम — न — जाओ भाभी —।

इस बीच सास-ससुर भी सकरुण स्वर मे अपनत्व का भाव लेकर बोल— ' बहू ! शीघ्र लौटने का प्रयास करना। यहां हम बडी उत्सुकता से तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे— ।

तभी हरखू नौकरानी आगई। वह चकित सी रह कर दु खी मन से बोली-" कसी कु दन सी दमकती काया थी और अब— ।"

अत्यत भावावेश म वह शेष शब्दो का उच्चारण भली प्रकार न कर सकी।

इसके विपरीत वृद्ध कोठारी जी अपने आक्रोश को हृदय म छिपा न सके।

'वे लोग कसाई हैं अथवा ——!"

कहने की आवश्यकता नही है कि लाडीसा के निर्देश का अनुसरण करते हुए हरखू इस अशान्ति एव असतोष का कारण जानने का प्रयत्न करने लगी। अकेली पाकर उसने पूछा-" नीरू बाईसा ! क्या सुसराल मे किसी स झगडा हो गया है ?'

'नही री। —नीरू ने सहज-स्वाभाविक स्वर म शांति-पूवक उतर दिया — मेर सास-सुसर तो देवी-देवता के तुल्य हैं। उनसे मुझे कोई शिकायत नहीं।'

हैं —।'

हरखू की आखे आश्चय से फटी रह गई।

उसने दूसरा प्रश्न किया —" तो फिर किसी बात पर कु वर साहब से कहा-सुनी हो गई है क्या ?"

इस बार निमला के अधरो पर प्यारी सी मौन ह सी की छाया तैर गई। उसने कहा — "उनकी तो मैं आखो की पुतली हू ——।"

'अच्छा। एसी बात है——।

हरखू के नत्र अकस्मात् भाल पर टक गये।

सम्भवत नीरू का ध्यान इधर नही हैं। वह तो शून्य मे दृष्टि गडाये चुपचाप पलग पर निश्चल प्रतिमा सी बनी बठी है। एक क्षण के लिए

लगा कि वह आत्म—विस्मृत सी हो कहीं खो गई है।

हरखू ने उसका ध्यान भग करते हुए पुन पूछा- 'तो नीरू बाईसा एसा कौनसी बात है, जो आपके दिल म काटा बनकर कसक रही है ?' काटा।'

निमला सहसा चौकन्नी हो गई। वह धीरे से अस्फुट स्वर में बोली 'एसी बात — ।'

अब उसकी निगाह उठकर प्रश्न—कर्ता की आखो में गड सी गई —'बात की क्यो पूछती है तू— ।'

इसके साथ उसका भयभीत और वेदना—कातर हृदय उमड आया नदी के स्रोत जसा अश्रु-प्रवाह प्रारम्भ हो गया। उसकी गहराई, उसका गति—वेग उसके आवर्तन का आलोडन अत्यन्त मर्म-विदारक है। बस नौकरानी का नारी मन अब विचलित हो गया। अचानक रुलाई के आवेग म उसके भी होठ फन गये।

नहीं—नहीं। ऐसा मत करिये बाईसा——।"

नीरू का विक्षत अतर स्नेहार्द्र हृदय का आश्रय पाकर सहसा आर्तनाद कर उठा—

बस, दिन तो किसी भी प्रकार व्यतीत हो जाता है हरखू । — मगर रात — मगर रात — रात —।

एक विचित्र प्रकार की व्यथा उन कजरारी आखो की अथाह न पलको म घनी भूत होगई।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि सम्पूर्ण वृतांत सुन कर लाडीसा भौचक्की रह गई। उनका तन अनजान त्रास से एकाएक सिहर उठा। व आग्रह-पूर्वक पूछ बैठी— तब क्या हुआ ?'

एक प्रकार से डरी-सहमी सी हरखू ने उत्तर दिया — 'लाडीसा ! होना को तो क्या था ? बस, मेरी तो डर के मारे आखें बन्द होगई। नीरू बाईसा कभी तो आहें भरती कभी सिसकती और कभी कुछ बडबडाती। कमरा अदर से बन्द है और वे टूटी-टूटी नीद म बक रही हैं। सच मानिय वे ही बातें जैसे साक्षात् तस्वीरो के रूप म मेरे सपना स भरी नीद को तोडने का प्रयास करती, किन्तु फिर हर बार यही सपना टूटी हुई नीद के साथ जुड जाता --- । मुझे तो पूरा विश्वास है कि किसी प्रेतनी की छाया -- ।'

"क्या ?'

लाडीसा मानो रसातल म चली गई।

न्ही! —वे घबराकर प्रतिवाद करने लगी— ऐसा कदापि नही हो सकता। सभी जानते हैं कि इस परिवार पर कुल देवी माता जगदम्बा की असीम अनुकम्पा है, इसलिए किसी प्रेतनी अथवा पिशाचिनी का इस हवेली म प्रवेश करने का प्रश्न ही नही उठता।'

आप माने चाहे न माने, पर नीरू बाईसा की आखें निश्चित रूप स पहले जसी नही है। आप ध्यान स देखेंगी तो पता चलेगा कि उनम वह चमक भी नही है।

"हा। यह तो मैंने भी लक्ष्य किया है।—अब ?'

चिंतित मुद्रा के समक्ष एक प्रश्न वाचक चिन्ह लग गया।

सम्भवत अमावस्या की काली अधेरी रात आधी के लगभग बीत चुकी है। नीरव स नाटा गहरा हो गया है। आकाश गगा का दूधिया रग खिल रहा है।

'बजरग बली की जय।'

इसी समय सम्मिलित कण्ठ स भय रहित उद्घोष करके हारा और मोती मरघट की ओर धीरे धीरे आगे ब ने लग।

छोटी तलया क पास ही श्मशान है। इसका पानी केवल जानवरो क पीने के काम आता है। वह चारों ओर स झड बेरी बबूल और नीम क वृक्षों स घिरी हुई है। रात म उल्लू और गीदड मनहूस आवाज म चिल्लाते हैं। दिन भर मसानिय कुत्त निद्वद्व घूमते रहते है। प्राय वे मिट्टी खोदकर धरती क अदर गडी बच्चों की लाशें बाहर निकाल लेते है।

व जब मरघट क समीप पहुच तो कई कुत्तो की सम्मिलित आवाज पूरी चार्वें सुनकर ठहर गय। उ होने सुदूर दृष्टि पसार कर देखा, मगर

कुछ भी नजर नहीं आया है। आश्वस्त हो तनिक आगे बढे तभी उस निस्तब्ध वातावरण मे किसी मजार उल्लू की चीख भी मन मना उठी। उन दोनो की कपकपाती आंखो मे एक विचित्र प्रकार का डर छा गया।

'हीरा ! मेरा तो आगे बढ़ने की हिम्मत ही उत्तर दे गई है।"— उनमे स एक धीरे से बोला।

"मोती ! यहां भी ठीक यह हाल है।'—दूसरे ने भी सहमति प्रकट की— आज सुबह ही एक मुर्दा जलने क लिए आया है।"

तो निश्चित रूप से अभी यहा भूना और प्रेतों का निवास है। अगर भूल स वहा चले गय तो जान पर बन आएगी —।"

थोड़ी देर क लिए उनके मध्य मौन का एक बोझिल सा टुकडा निरन्तर परिक्रमा करता रहा।

हीरा ! सुना है कि नीरू बाईसा को कोई डायन लगी है।"

"डायन !"

वह चौंक पडा। धडकते कलेजे को थामकर वह आहिस्ते से बोला— यार क्या डायन प्रेता का नाम लेना है। यहा तो ऐसे ही पसीना छूट रहा है।'

कदाचित् मोती ने सुनी अनसुनी करदी।

"— इसलिय तो आज लाडीसा ने यह 'उतारा' किया है। देख इस हाडी में बढ़िया घी-मसाले से बना बकरे का ताजा मास है और यह पूरी दारू की बोतल। उनका विश्वास है कि आज की रात मरघट के भूत-प्रेतों को प्रसन्न और शांत करने के लिय यह 'प्रसाद भिजवाना आवश्यक है — —।'

शि——शि चुप !'—होठों पर उगली रखकर हीरा कुछ

लाड़ीसा मानो रसातल म चली गई।

नहीं ! —व घबराकर प्रतिवाद करने लगी— ऐसा कदापि नहीं हो सकता। सभी जानते हैं कि इस परिवार पर कुलदेवी माता जगदम्बा की असीम अनुकम्पा है इसलिए किसी प्रेतनी अथवा पिशाचनी का इस हवेली म प्रवेश करने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

आप माने चाहे न माने, पर नीरू बाईसा की आखें निश्चित रूप स पहले जसी नहीं है। आप ध्यान से देखेंगी तो पता चलेगा कि उनमे वह चमक भी नहीं है।

"हा। यह तो मैंने भी लक्ष्य किया है।—अब ?'

चिंतित मुद्रा के समक्ष एक प्रश्न वाचक चिह्न लग गया।

सम्भवत अमावस्या की काली म धेरा रात आधी क लगभग बीत चुकी है। नीरव स नाटा गहरा हो गया है। आकाश गगा का दूधिया रग खिल रहा है।

'बजरग बली की जय।'

इसी समय सम्मिलित कण्ठ से भय रहित उद्घोष करके हीरा और मोती मरघट की ओर धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे।

छोटी तलया के पास ही श्मशान हैं। इसका पानी केवल जानवरो क पीने के काम आता है। वह चारो ओर से झड बेरी बबूल और नीम के वृक्षो स घिरी हुई है। रात म उल्लू और गीदड मनहूस आवाज म चिल्लाते हैं। दिन भर मसानिय कुत्त निद्वद्व घूमते रहते हैं। प्राय वे मिट्टी खोदकर धरती के अदर गडी बच्चो की लाशें बाहर निकाल लते हैं।

व जब मरघट के समीप पहुंचे तो कई कुत्तो की सम्मिलित आत पूर्ण चीखें सुनकर ठहर गय। उन्हाने सुदूर दृष्टि पसार कर देखा, मगर

कुछ भी नजर नहीं आया है। आश्वस्त हो तनिक आगे बढे, तभी उस निस्तब्ध वातावरण मे किसी प्रकार उल्लू की चीख भी मन मरा उठी। उन दोनों की कपकपाती आखो में एक विचित्र प्रकार का डर छा गया।

"हीरा ! मेरा तो आगे बढने की हिम्मत ही उत्तर दे गई है।"—उनमे स एक धीरे से बोला।

"मोती ! यहा भी ठीक यह हालत है।"—दूसरे ने भी सहमति प्रकट की— आज सुबह ही एक मुर्दा जलने के लिए आया है।"

'तो निश्चित रूप से अभी यहा भूता और प्रेतो का निवास है। अगर भूल से वहा चले गय तो जान पर बन आएगी —।"

थोडी देर क लिए उनके मध्य मौन का एक बोझिल सा टुकडा निष्काक परिक्रमा करता रहा।

हीरा ! सुना है कि नीरू बाईसा को कोई डायन लगी है।"

'डायन !"

वह चौक पडा। घबराकर कलजे को थामकर वह आहिस्ते से बोला—'यार, क्यो डायन प्रेतो का नाम लेता है, । यहा तो ऐसे ही पसीना छूट रहा है।"

कदाचित् मोती न सुनी अनसुनी करदी।

"— इसलिये तो आज लाडोसा न यह 'उजाग' किया है। देख इस हाडी म बढिया घी-मसाले स बना बकरे का ताजा मास है और यह पूरी दारू की बोतल। उनका विश्वास है कि आज की रात मरघट के भूत-प्रेतों को प्रसन्न और शात करने के लिये यह 'प्रसाद भिजवाना आवश्यक है — —।'

'शि——शि चुप !' —होठों पर उगली रखकर हीरा कुछ

रहस्य-पूर्ण सकेत करने लगा– "सुन —" आहट सुन। कोई हमारी तरफ आ रहा है — ।"

बस, किसी भयानक और विभत्स दृश्य की कल्पना-मात्र से वह अचानक अवसन्न सा रह गया। उसे लगा, जसे रीढ की हड्डी के पास से कोई चीज काप कर सरक गई। चेहरे का रग एक दम उड गया।

'अरे, व अपना प्रसाद लेने आ रहे है।"—मोती त्रसित स्वर म हठात् चीखा– 'हाडी और बोतल यही रखदे और भाग चल नही तो।'

बस व अपना वाक्य अधूरा छोडकर सिर पर पाव रख कर भागे। उन्होंने पलटकर पीछे भी नही देखा।

यह स्पष्ट है कि आज कई दिनों के अनन्तर निमला अकस्मात् खिलखिला कर हस पडी। उसका खिन्न और उदास चेहरा एक अनोखी माधुरी से उद्भासित हो उठा।

एक अच्छी श्रोता पाकर हरखू ने भी एक कुशल व्यवसायिक वक्ता की सी मुद्रा बनाई और कहने लगी– हा, बाईसा ! मैंने भी उससे (पति) पूछा —तू आज इतनी छककर कहा से पीकर आया है ?—"इस पर उस की जीभ लडखडा गई। हाथ पाव तो पहले ही से सम्भल नही पा रहे थे और अब गदन भी एक ओर लटक गई। मैंने फिर पूछा तो इसके उत्तर म बोला—'अब अपनी भूता से दोस्ती—हो—गई है—।

हरखू का कृत्रिम मुद्रा बनाकर अभिनय करते हुए बोलना नीरू को भा गया। किंचित् मुस्कराकर चहकी— भूता से दोस्ती !

नौकरानी ने अपनी उ गली गाल पर टिकाई और आचल स सिर

ठक कर चकित नज़रों से बोली— सुनो उसकी। भूतों से दोस्ती! कहीं यह मानने वाली बात है! मैंने खोद-खोद कर खूब पूछा। बस, वह तो हि हि करके हँसता ही रहा। मैं सच्ची कहूँ आपसे सुनकर एक बार तो बड़ा डर लगा। लेकिन उसका साथ— ।

अब हरखू तनिक लजा गई।

फिर——।"

"—फिर, पता नहीं कैसे वह अचानक होश में आ गया। वह बूढ़ा बड़बड़ाता हुआ अपने डगमगाते पैरों को घसीटकर पास की कोठरी के भीतर चला गया और वहाँ से एक थाली में रोटियाँ व एक बड़े कटोरे में गरम गरम मसालेदार मांस ले आया। मैंने आश्चर्य से पूछा— यह क्या? बोला रोज तू रोटियाँ लाकर खिलाती है। आज मैं खिलाऊँगा— ।'

'—और इसके बाद उसने हाथ पकड़ कर मुझे भी थाली पर बैठा लिया। बस बाईसा मैंने आज तक इतना स्वादिष्ट मांस नहीं खाया। मैं तो उँगलियें चाटती रह गई — ।"

'अच्छा। —निमला विनोद की भंगिमा बनाकर दुष्टता से चिढ़ाने लगी— तो इससे ज्ञात हुआ कि मोतो तुझे खूब प्यार करता है— ।'

हरखू का मुख क्षण भर में मलिन सा हो गया। उसने संकोच पूर्वक अपना सहज स्वाभाविक विश्वास प्रकट कर दिया— यूँ हर एक मर्द अपनी औरत को प्यार ही करता है — ।

इतना इतना सुनते ही निमला की हँसी की फुलझड़ी छूट गई।

हरखू ने अपनी बात समाप्त करते हुए अंत में कहा— हम खा पीकर सो गए। सुबह जब मैं उठी तो वह सारा रहस्य मेरे आगे खुल गया। असल में वह बेईमान श्मशान घाट से उतार की ही और लाश की बोतल उठा लाया था। मैं बोली—अरे, तुम्हें शर्म नहीं आती

जो भूतों का प्रसा' उठा लाये। अगर तुम्ह कुछ होगया तो "तो "।'
इसका उत्तर भी उसने बडी लापरवाही से दिया—"तो"तो कुछ नही होगा। पगली! य भूत प्रेत और आत्मा—वात्मा सब बकवास हैं। लोगो को बवकूफ बनाने की बातें हैं। जिनके दिल कमजोर होते हैं वे ही डरते हैं। मरने के बाद कोई वापिस लौटकर नही आता। समभी। देख, कितना अच्छा प्रसाद था। हम दोनो ने कसे चाव से खाया! अब बता, इतना अच्छा प्रशाद भला वहा कुत्ता के खाने के लिये कस छोड दे! यह तो परले सिरे की मूखता है।'

'हाय राम! ये कसी बातें करते हो?—' हरखू की मति एकदम भ्रष्ट होगई।

पत्नी की चित्त शुद्धि के लिए मोती ने तनिक गव-पूवक कहा—"हुम—! मैं तो मरघट म स ऐसा प्रसाद कई वार उठाकर ल आया और चट कर गया। देख मुझे तो आज तक कुछ नही हुआ है और तेरे सामने भल चगा बठा हू। मुझे तो पूरा भरोसा है कि आगे भी कुछ नहीं होगा। अरी बावरी! वास्तव म ये भूत प्रेत और आत्मा—वात्मा केवल मन का बहम है और कुछ नही ।"

उसकी बातो को सुनकर हरखू की आखें भय मिश्रित विस्मय से फटी रह गई।

मन का बहम — ।"

निर्मला अपने अनजान ही सिहर उठी। धीरे धीरे उठकर खिडकी के पास खडी हो गई। देर तक उसी अवस्था में ध्यान मग्न सी शून्य मे ताकती रही।

भोर हुई एक शीतल सुखद और कांतिपूर्ण, जो रात्रि—कालीन आकाश का भञ्जन करती हुई धीरे धीरे आई। यह भोर एक नई हलचल एवं नई गति दृष्टि—गत होने लगी। सम्पूर्ण हवेली जगी तो ठंडी—ठंडी हवा आकर सब के चित्त पुलकित कर गई। लाजवन्ती नहा—धो कर पूजा पाठ करने के लिए मन्दिर वाली कोठरी में बन्द हो गई। भाव पर वस्त्रादि लेकर निर्मला भी स्नान करने की नीयत से गुसलखाने की तरफ रवाना हो गई। उसी समय हाथ में झाड़ू लेकर हरगू ने कमरे में प्रवेश किया। दोनों की आकस्मिक भेंट हो गई।

निर्मला एक पल ठिठकी। उसने नौकरानी पर दृष्टि-पात किया। बिखरे बाल, उलटा आंचल, राग-पसीने व थकान से ढीला-ढाला चेहरा। इस पर भी स्नेह से भरी-भरी झुकी आंखें। वह भली-भांति जानती है कि हरगू रोज उषा काल में ही पूर्व बिस्तर छोड़ देती है और आलस्य

त्यागकर काम मे लग जाती है । पता नही आज उसका दयाद्र मन कैसे -कसे होने लगा ।

जब नौकरानी उसके पलग के पास गई और बिछावन को ठीक -टाक करने लगी तो निमला से रहा नही गया । वह अपने हृदय के भाव को अधिक दवा न सकी । हसकर पूछ बठी– ' क्यों हरखू तुम्हारे उस भूतो के दोस्त ने कोई नई बात सुनाई ?'

सुबह–सुबह की यह मीठी छेडछाड नौकरानी को भागई । उसके मुख-मण्डल पर उषा की सलज्ज लाली अनायास ही उतर आई । मुस्करा कर बोली— नही ।"

"यह कदापि नही हो सकता "—विनोद की प्रिय मुद्रा मे रस लकर नीरू ने प्रतिवाद किया ।

' मैं आप से सच्च कह रही हू ।'

हरखू तनिक लजा गई ।

'अच्छा !'

नीरू के हास्यो उज्वल मुख से अचानक निकल पडा ।

कुछ देर के पश्चात् हरखू ने कहा—' बाइसा ! सुना है कि आपने रात भर खूब गहरी नीद ली ।'

' कौन कहरहा था ? —आहिस्ता मे पूछा नीरू ने ।

झट से हाथ नचाकर हरखू न उत्तर दिया— दूसरा कौन कहने वाला है । खुद लाडीसा ने मुझे बताया है ।

हा । —प्रसन्न भाव से नीरू कहने लगी— सच कल रात तो एक विचित्र चमत्कार ही होगया । भाभी सा पास थी और मेरा चित्त शात । बस, रह रहकर तेरे पति की मन के बहम वाली बात याद आनी रही ।'

भोर हुई एक शीतल सुगन्ध और कांतिपूर्ण जो रात्रि-कालीन आकाश का भेदन करती हुई धीरे धीरे आई। चहुं ओर एक नई हलचल एक नई गति दृष्टि-गत होने लगी। सम्पूर्ण हवेली जगी तो ठंडी-ठंडी हवा आकर सब के चित्त पुलकित कर गई। लाडीला नहा-धो कर पूजा पाठ करने के लिये मंदिर वाली कोठरी में बन्द हो गई। साथ पर वस्त्रादि लेकर निर्मला भी स्नान करने की नीयत से गुसलखाने की तरफ रवाना हो गई। उसी समय हाथ में झाड़ू लेकर हरखू ने कमरे में प्रवेश किया। दोनों की आकस्मिक भेंट हो गई।

निर्मला एक पल ठिठकी। उसने नौकरानी पर दृष्टि-पात किया। बिखरे बाल, ढलका आंचल रास-पसीने व थकान से ढीला-ढाला चेहरा। इस पर भी स्नेह से भरी-भरी हंसती आंखें। वह भली-भांति जानती है कि हरखू ठीक उषा काल से ही पूर्व बिस्तर छोड़ देती है और आलस्य

त्यागकर काम में लग जाती है। पता नहीं आज उसका दयाद्र मन कैसे-कैसे होने लगा।

जब नौकरानी उसके पलंग के पास गई और बिछावन को ठीक-ठाक करने लगी तो निमला से रहा नहीं गया। वह अपने हृदय के भाव को अधिक दबा न सकी। हंसकर पूछ बैठी– 'क्यों हरखू तुम्हारे उस भूतों के दोस्त ने कोई नई बात सुनाई ?'

सुबह-सुबह की यह मीठी छेड़छाड़ नौकरानी को भा गई। उसके मुख-मण्डल पर उषा की सलज्ज लाली अनायास ही उतर आई। मुस्करा कर बोली— नहीं।"

"यह कदापि नहीं हो सकता'—विनोद की प्रिय मुद्रा में रस लेकर नीरू ने प्रतिवाद किया।

'मैं आप से सच्च कह रही हूं ...।

हरखू तनिक लजा गई।

'अच्छा !'

नीरू के हास्योज्ज्वल मुख से अचानक निकल पड़ा।

कुछ देर के पश्चात् हरखू ने कहा— बाईसा ! सुना है कि आपने रात भर खूब गहरी नींद ली।'

कौन कह रहा था ?"—आहिस्ता से पूछा नीरू ने।

झट से हाथ नचाकर हरखू ने उत्तर दिया— दूसरा कौन कहने वाला है। खुद बाईसा ने मुझे बताया है।'

"हां।'—प्रसन्न भाव से नीरू कहने लगी— सच कल रात तो एक विचित्र चमत्कार ही होगया। भाभी सा पास थी और मेरा चित्त शांत। बस, रह रहकर तेरे पति की मन के वहम वाली बात याद आती रही ...।'

"अरे, यह क्या ?'

सहसा हरखू आश्चय से चीख सी पड़ी ।

उसन पलग के नीचे नींबू के टुकडे और आम के अचार के छिनके देखे।

निमला न सहज-स्वाभाविक स्वर म उत्तर दिया– रात को अचानक मेरा जी पता नही कैसे-कसे होने लगा । एक प्रकार से मितली सी आन लगी । क भी होगई। भाभी सा को बिना बताये मैं उठी और सीधी रसोइ घर म चली गइ । वहा से नींबू और करी क अचार की फाकें उठा लाई और ।

"बाईसा ! क्या आपको खट्टी मिट्ठी चीजें अच्छी लगती हैं ? — आकस्मिक उमड आए उल्लास के उद्रक को रोक कर हरखू न पूछा ।

'हा।'

'कभी कभी जी मचलता है और क भी होती है ?

'हा ।"

अब निमला न अचम्भित होकर प्रश्न किया—'पर तू यह सब क्यो पूछ रही है ?

हरखू अप्रत्याशित हृष के आवेग मे खिलखिला उठा ।

'इसलिये कि तुम्हारे भीतर एक चोर छिपा बठा है ।"

"चोर ?

"हा ?'

"वह कसा ?'

"अभी पता चलता है ।"

और हरखू छोट बच्चे की तरह ताली पीट कर वहा से तडित वेग स भागी ।

"लाडीसा ~~ला ~ डी~ ~ सा~sss ~~ ।'

एक मन-मोहक उच्छ्वास और प्रीतिकर कलरव से सारी हवेली गूंज उठी। उसके आगन में सरस सजीवता छागई। सबके चेहरे आनन्दोल्लास से खिल उठे।

ठाकुर तेजसिंह की त्रस्त विव्हल दृष्टि एक-दम शांत स्थिर होगई। लाडीसा के अंतस में घिर आई दुश्चिंता की छाया अपने समस्त विकार लेकर अदृश्य हो गई। ढोलक पर रसीले गीतों की सरगम बजने लगी।

निर्मला के विवाह को हुए लगभग एक वर्ष से ऊपर होगया। वह प्रथम बार गर्भवती हुई है। प्रसन्नता की बात तो यह है कि वह शीघ्र ही मातृत्व का सुख प्राप्त करने जा रही है। अबतो उसके चेहरे पर भी कोई अनिर्वचनीय कांति दमक रही है। इसका अनुकूल एवं वांच्छित प्रभाव तो अंतःकरण पर भी पड़ा है, तभी वह प्रसन्न-वदन तथा शांत-चित्त दिखलाई पड़ती है। वे भयकर आवेग एवं संवेग जिन्होंने उसके

कई मास बीत गये। यन्त्रवत् जीवन धारा बहती रही। इस अवधि में कोई विशेष उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। यद्यपि महेश का अशांत एवं उद्विग्न चित्त अभी तक सामान्य तथा स्वाभाविक नहीं हो पाया। रह रह कर निर्मला का उसके प्रति कठोर तथा तिरस्कृत व्यवहार हृदय को कचोटता रहता।

भारत की क्रिकेट टीम पाकिस्तान टैस्ट खेलने जा रही है। महेश के लिये निमन्त्रण आया है। परन्तु उसने ठुकरा दिया। मन स्थिति अस्त-व्यस्त है, अतः जाना सम्भव नहीं हो सकता।

इस अन्यमनस्क अवस्था में उसका गाँव में स्थाई रूप से रहना एक प्रकार से कठिन होगया। रुचि के विरुद्ध अध्ययन में भी मन नहीं लगा। बस, वह निकल पड़ा दिशा हीन होकर।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह कुछ दिनों तक अपने पथ से

भटके हुए नक्षत्र की भांति सौर मण्डल में निरुद्देश्य परिक्रमा करता रहा। कभी एक शहर में जाकर ठहरता तो शीघ्र ही जी ऊब जाता और वह दूसरे के लिये चल पड़ता। यहां भी अशांति एवं बेचैनी उसका पीछा नहीं छोड़ती और वह वहां से भी भागने के लिये विवश हो जाता।

इसी प्रकार भागते भागते वह एक दिन सुन्दर समुद्र-तट पर पहुँच गया। दूर तक उफनते हुए जल का सुविस्तृत विस्तार! उसका गर्जन तर्जन सुमधुर संगीत की सृष्टि करता है, जो रागात्मक अनुभूति से विक्षिप्त और व्याकुल मन को अभिभूत कर जाता है। किनारे पर बालुका राशि का चमकीला आंचल। उस पर लेटने को जी मचल उठता है। समुद्र स्नान करने वालों की लहरों के संग खिलवाड़ मुग्ध कर जाती है और उसे ताकते रहने को आंखें तरसती हैं। सूर्योदय का दृश्य तो अलौकिक है—अद्भुत है। लगता है, जैसे उमड़ती हुई लहरों में से एक मधु घट ऊपर उठ रहा है और देखते-देखते सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपनी अरुण रश्मियों के द्वारा अमृत वर्षा कर रहा है......

विशेष कर रात में लहराते हुए नारियल के पेड़ और साथ-साथ बहती समुद्री हवा एक विचित्र मधुर वातावरण उत्पन्न करती है। इस अति रमणीक परिवेश में महेश का चित्त किंचित् शांत हुआ। हल्के शीत से भीगे पवन में आसन्न बसंत का आभास पाकर मन मयूर नाच उठा। बीच-बीच में निमग्न दृष्टि से परिम्लान ज्योत्स्ना से आच्छादित सागर-वक्ष को देखकर मन चक्षुओं के समक्ष वहीं बहु-स्मृति मण्डित अनेक क्षण उद्भासित हो उठे जिनके साथ अतीत में उसका गहरा अनुरक्ती पूर्ण सम्बंध रहा है।

आकाश के एक कोने में नारियल के पेड़ों के ऊपर क्षीण चन्द्र मुस्करा रहा है। बस, महेश उसे देखता ही रह गया। तभी अचानक उसमें एक मुरझाया नारी मुख दृष्टि गोचर हुआ। महेश चौंक पड़ा।

कई मास बीत गये। यन्त्रवत् जीवन धारा बहती रही। इस अवधि में कोई विशेष उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। यद्यपि महेश का अशांत एवं उद्विग्न चित्त अभी तक सामान्य तथा स्वाभाविक नहीं हो पाया। रह रह कर निर्मला का उसके प्रति कठोर तथा तिरस्कृत व्यवहार हृदय को कचोटता रहता।

भारत की क्रिकेट टीम पाकिस्तान टेस्ट खेलने जा रही है। महेश के लिये निमन्त्रण आया है। परन्तु उसने ठुकरा दिया। मन स्थिति अस्त व्यस्त है अतः जाना सम्भव नहीं हो सकता।

इस अन्यमनस्क अवस्था में उसका गांव में स्थाई रूप से रहना एक प्रकार से कठिन होगया। रुचि के विरुद्ध अध्ययन में भी मन नहीं लगा। बस वह निकल पड़ा दिशा हीन होकर।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह कुछ दिना तक अपने पथ से

भटके हुए नक्षत्र की भांति सौर मण्डल मे निरुद्देश्य परिक्रमा करता रहा। कभी एक शहर मे जाकर ठहरता तो शीघ्र ही जी ऊब जाता और वह दूसरे के लिय चल पडता। यहां भी अशाति एव बेचैनी उसका पीछा नहीं छोडती और वह वहा से भी भागने के लिये विवश हो जाता।

इसी प्रकार भागते भागते वह एक दिन सुदूर समुद्र-तट पर पहुँच गया। दूर तक उफनते हुए जल का सुविस्तृत विस्तार ! उसका गर्जन तर्जन सुमधुर सगीत की सृष्टि करता है, जो रागात्मक अनुभूति से विक्षिप्त और व्याकुल मन को अभिभूत कर जाता है। किनारे पर बालुका राशि का चमकीला आचल। उस पर लेटने को जी मचल उठता है। समुद्र स्नान करने वालो की लहरें के सग खिलवाड मुग्ध कर जाती है और उसे ताकते रहने को आखें तरसती हैं। सूर्योदय का दृश्य तो अलौकिक है—अद्‌भुत है। लगता है, जैसे उमडती हुई लहरो म से एक मधु घट ऊपर उठ रहा है और देखते-देखते सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपनी अरुण रश्मियो के द्वारा अमृत-वर्षा कर रहा है——

विशेष कर रात मे लहराते हुए नारियल के पेड और साय-साय करती समुद्री हवा एक विचित्र मधुर वातावरण उत्पन्न करती है। इस अति रमणीक परिवेश मे महेश का चित्त किंचित् शात हुआ। हल्के शीत से भीगे पवन मे आमन्त्र बसत का आभास पाकर मन मयूर नाच उठा। बीच-बीच म निमग्न दृष्टि से परिम्लान ज्योत्स्ना से आच्छादित सागर-वक्ष को देखकर मन चक्षुओ के समक्ष वही बहु-स्मृति मण्डित अनेक क्षण उद्‌भासित हो उठे जिनके साथ अतीत म उसका गहरा अनुरक्ती पूर्ण सम्बन्ध रहा है।

आकाश के एक कोने म नारियल के पेडों के ऊपर क्षीण चन्द्र मुस्करा रहा है। बस महेश उसे देखता ही रह गया। तभी अचानक उसमे एक मुरझाया नारी मुख दृष्टि गोचर हुआ। महेश चौंक पडा।

वह दृश्य माना उसके अंतर पट पर अंकित होगया। बस, अब तो व्याकुल हृदय के निर्देश को टालना सम्भव नहीं है।

उस दिन वह सीधा जाकर निमला के सम्मुख खड़ा होगया। परिवार सहित पत्नी भी स्तम्भित रह गई। दुबला-पतला श्री हीन व्यक्तित्व सिर व दाढी के बढ़े हुए केस। बुझी बुझी सी आखें।—निमला को एक धक्का सा लगा। वह समझ नहीं पाई। वह पहले की तरह बच्चे के पालने के पास सिर झुकाये चुपचाप खड़ी रही।

इसके पश्चात् उनके मध्य मौन का एक लघु अंतराल रहा। न तो मन्मेग के कण्ठ से कोई शब्द ही फूटे और न नीरू की जीभ को कोई गति ही मिली। लगता है मानो उनके शब्द कहीं खो गये हैं।

सहसा निमला के अभ्यतर में विद्युत लहर सी तरगित होगई। आज प्रथम अवसर है कि पति के साथ किये गये अपने अकुशल एवं निमम व्यवहार का दुष्परिणाम इस अवस्था में देखकर वह एकदम अवसन्न रह गई। सचमुच वह कितनी कठोर है, कितनी निष्ठुर है, कितनी हृदय हीन है। यहां आने के बाद वह पति को एक प्रकार से भूल सी गई—उनकी चाहकर भी सुध न ली। अपने में ही स्व केंद्रित रहकर उसने एक निम्न-कोटि की क्षुद्र स्वार्थ परता का परिचय दिया है। कृष्णा के भेजे हुए पत्रों के भी उसने समय पर उचित ढंग से उत्तर नहीं दिये हैं। एक प्रकार की लज्जा ग्लानि और आत्म-यत्रणा को सह न सकी। केवल पति की ओर आहत आखों से निहारती रही। क्षण भर पश्चात् अपने रुलाई के आवेग को रोक न सकी। वह अंतर प्रवाहिनी सी बन कर खड़ी अविरल अश्रु धारा बहा रही है।

यह द्रवित भाव!

कई पल मन्मेग असमजस में चुपचाप खड़ा देखता रहा तदुपरान्त पास आकर उस अश्रु-प्लावित मुख को ऊपर उठाया और व्यग्र होकर

पारन्दर्शी नेत्रा से टकटकी लगाकर देखता रहा। वही भोला भाला मुखडा वही उस पर जडी सीप सी दो स्नेहिल बडी-बडी ग्राखें, वही फूल की पखुडियो क सन्दृश थरथराते हुए कोमल होठ—जिनपर अनायास ही प्रेम के मधुर तराने मचलने लगते हैं।

भावावश मे महेश ने निमला को बाहों मे भर लिया और अपने प्रेम का ग्रमिट चिन्ह एक उष्ण चुम्बन के रूप में उसके ग्रधरों पर ग्र कित कर दिया।

'मेरी नीरू!

अचानक उसका स्वर काप गया।

' सचमुच मैंने तुम्हे बहुत दुःख पहुचाय हैं। मैं — मैं— —क्षमा — —क्ष मा — ।

परिताप स भरे य शब्द निमला के हृदय का स्पश कर गय। वह व्याकुल भाव से बोली—"नहीं—नहीं। क्षमा तो मुझे मागनी चाहिए। मैंने ही— — ।'

बस विराम अविलम्ब ही वह बाहो का घेरा टूटा और उद्वेग—जन्य चचनता लेकर निमला मुडी। द्रुत—गति से वह एक ग्रालमारी के पास गई। उसे खोला। एक ग्रलबम और कुछ फोटो उसम स निकाले, फिर ग्राधी वग से कमरे के बाहर चली गई।

पत्नी का यह काय महेश की समझ म रत्ती भर भी नहीं ग्राया। वह ग्राश्चर्य-चकित रहकर बडी खामोशी से सब कुछ देखता रहा। जब नीरू थोडी देर में रिक्त हाथों वापिस लौटकर ग्राई तो उसकी विस्मित ग्राखों से एक मूक प्रश्न फूट पडा।

वह सुख एव सन्तोष की धामी हसी हस पडी। लगा जसे कमरे की चारों दीवारें हस पडी हैं—उसमें छाया ग्रशुभ और मोह-हीन सन्नाटा एक-दम छिन्न-भिन्न हो गया है।

महेश की सप्रन्न दृष्टि उसके उद्वग–हीन चेहरे पर पुन जम गई।

देखत–दखत घु घल बादल छट गये। नीलाम्बर स्वच्छ और स्पष्ट दृग्गोचर होने लगा। सम्पूर्ण सृष्टि का अभिषेक करने के लिय नया सूर्योदय हो गया। निमला विकार शून्य सी हो कर धीरे धीरे कहने लगी – 'कदाचित् आप कुछ पूछना चाहते हैं, किन्तु मैं समझ गई। मैं आप को बता देना चाहती हू कि मैंने अपने अतीत को अग्नि की भेंट चढा दिया है। य स्मृतिया ये अनुभूतिया, य आवग, ये सवग इन सबने मिलकर मेरे जीवन म विष घोल दिया था, परिणाम—स्वरूप मैं दु स्वप्न के भयावने ससार म भटकती रही–ठोकरें खाती रही, मगर अब मैं ——— अब मैं — उनसे मुक्ति पाकर नये जीवन का अभिनन्दन — ।'

सहसा उसकी निगाह पालन में मुस्कराते हुए शिशु पर स्थिर हो गइ। उस अबाध की वह भुवन मोहन मुस्कान उसे भा गई। वह आत्म-विभोर सी हो ह स पडी। इसके पश्चात् मातृत्व की सरल–स्वाभाविक अभिव्यक्ति से उसका मुख मण्डल उद्भासित हो उठा। उसने बडे प्रेम से पति से कहा—' देखिय यह आपका मुन्ना किस प्रकार प्रसन्न–भाव मे आनन्द पूर्वक मुस्करा रहा है — ।'

"कहा?

और महेश परो को एक नई गति मिल गई।